DESH KE NETAON

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. *नीरस जीवन बातें नीरस। 7*

2. *तुम जा कर देश विदेशों में। 8*

3. *आश्वासन देकर विकास का। 9*

4. *नेताओं के टोल निकलते। 10*

5. *छोटे से घोंसले की। 11*

6. *क्यों आज नशे तुम डूबे। 12*

7. *अभिशाप भरा जीवन ले कर। 12*

8. *नेता वह जो पर दुख देखे। 13*

9. *जल रही चिता मैं देख रहा। 14*

10. *अपनी पीड़ा से छुट कर तुम। 14*

11. *जग को पीड़ा से त्रस्त देख। 15*

12. *आज सुनोगे गीत यही तुम। 16*

13. *ऐ मानव के अस्थिपिंजर। 16*

14. *नजर पड़ी जो हाय किसी की। 17*

15. *वह देखो, भिखमंगा। 18*

16. *चाह उड़ू. पर। 19*

17. *याद आ रही उन वीरो की। 19*

18. *यदि करने को कुछ नहीं यहाँ। 20*

19. *मत करो प्रतीक्षा रूको नहीं। 21*

20. *जननी मेरा तुमको प्रणाम। 22*

21. *पूछा ही नहीं क्यों रो रहे। 22*

22. *सब विवश है भूख आगे। 23*

23. *पथ पर खड़ा देखता वह। 23*

24. *यह चमन खिले खिलता ही रहे। 24*

25. *जीवन सरिता वही जा रही। 24*

26. *ज्वालामुखी के गर्भ में। 25*27. *तुमको प्रसन्न करने को हम। 25*

28. *ऐ राष्ट्र समर्पित यह जीवन। 26*

29. *प्रिय भूषण हैं हम भारत के। 26*

30. *कौन आता है यहाँ पर। 26*

31. *कौन किसी का है जग में। 27*

32. *जगत प्रयोजन नहीं दीखता। 28*

33. *अन्तस्थल के दीपक तू जल। 28*

34. *शौक बन मिटते यहाँ पर। 29*

35. *सूखे पत्ते तुम बनो। 29*

36. *कुछ ठीक हुआ कुछ गलत हुआ। 30*

37. *गीत गा लें प्यार के दो। 30*

38. *कितने फूल यहाँ खिलते हैं। 31*

39. *आओ प्यार से चले हम तुम। 31*

40. *डगर है अनजान तो क्या। 32*

41. *प्यार प्यास के प्यासे पंछी। 32*

42. *ऐ मांझी दूर किनारा है। 33*

43. *बादल तैर रहे नभ पर। 32*

44. *तू दीप बन कर जल जगत में 34*

45. *पतझड़ में कैसे बसन्त का। 34*

46. *पग पग पर तुम किया तिरस्कृत। 35*

47. *झण्डा लेकर नौकरशाही। 35*

48. *आशा के सजा सजा सुपने। 36*

49. *छल कर तू लूटेगा मुझको। 37*

50. *सूनी सृष्टि नहीं होती है। 37*

51. *आँसू मेरे गिरते झर झर। 38*

52. *बीज जरूरी नहीं वृक्ष हो। 38*53. *कैसे तेरे आंसू पोछूँ। 39*

54. *दे रहे नारे सुहाने। 39*

55. *आशायें ले तुमको चुनते। 40*

56. *आंखों में खोये सुपने हैं। 40*

57. *नयना रोते पूछ रहे हैं। 41*

58. *जिन्दगी ने आज ठानी। 41*

59. *ना समझ तू है अकेला। 41*

60. *अपनी पीड़ा से बोझिल सब। 42*

61. *व्यर्थ सारा खेल चलता। 43*

62. *मांगती धरती है ऋण। 43*

63. *बहती धारा किसे खोजती। 43*

64. *सरिता सागर से मिलने को। 44*

65. *प्यार बांट ले मिले तुझे जो। 44*

66. *जीवन है गति का नाम। 45*

67. *बढ़ती नदिया अपनी धुन में। 45*

68. *चलता जा चुगता जा कांटे। 46*

69. *श्रम का दीपक यहाँ जला दे। 46*

70. *जीवन जी ले तू चलता जा। 46*

71. *बहो लहर बन कर सागर में। 47*

72. *जीवन की अन्तिम सांसों तक। 47*

73. *जीते जीवन यह कैसे। 47*

74. *कदम कदम पर धोखा फिर भी। 48*

75. *बिखरा हुआ है दुख यहाँ पर। 48*

76. *मत खोना निज अधिकारों को। 48*

77. *बनने मिटने की दुनियाँ में। 49*

78. *उठी वासना मिटा वासना। 4979. जीवन में तुम बढ़ो निरन्तर। 50*

80. *आंसू निकले पीना होगा। 51*

81. *दो पल चाहा डूबूँ तुझमें। 51*

82. *इस मन को समझाया हमने। 51*

83. *दर्द उठाये सीने में हम। 52*

84. *गीतों को किसे सुनायें हम। 52*

85. *चुप हो जाओ कुछ बोलो मत। 53*

86. *प्रकृति यहाँ पर रंग बदलती। 53*

87. *जिन्दगी दो दिन की पाई। 53*

88. *घूमती आवाज हूँ मैं। 54*

89. **सुरसा सी है भूख यहाँ पर।** *55*

90. *एक लहर सागर में चलती। 55*

91. *जाये बता दे कहाँ पर। 56*

92. *थके यहाँ पर कितने टूटे। 56*

93. *चल चल थके यहाँ हम। 57*

94. *दो बूंद मिली ना तरसे हम। 57*

95. *कांटे फूल बने जीवन में। 58*

96. *मर्म क्या है जिन्दगी का। 58*

97. *थका हूँ मैं चलते चलते। 59*

98. *निज साहस से बढ़ना जग में। 60*

99. *प्रेम शब्द में राम छिपा है। 61*

100. *टूट गये क्यों खून के रिश्ते। 62*

101. *तेरा घर अब वही बाबरी। 62*

102. *घूम बाबरी तू इस जग में। 63*

103. *दूध पिलाया जिस गोदी ने। 64*

1ण

नीरस जीवन बातें नीरस, सूखा रस क्यों कुछ तो बोलो? दिल भाषण से समझे कैसे, जब लगी क्षुधाा हो तुम बोलो। दुख की दारूण अग्नि में जल, कैसे मुस्कायें हम बोलो? अविरल आंसू की गंगा में, धाीरज दें मन कैसे बोलो?

सम्पन्न हुए सब साधान से, तुमको तेा मस्ती सूझ रही। तुम आँख उठा कर तो देखो, टोली भूखों की घूम रही। मेरा भी सुन्दर सुपना था, क्यों टूट गया मुख से बोलो। मुश्किल के कठिन क्षणों में हम, किससे कहते कुछ तो बोलो।

तन ढकने को है वस्त्र नहीं, खाने को भी है अन्न नहीं। ऐसी आजादी से तब क्या, जब जीवन में उल्लास नहीं। क्यों तड़ रहे अब भी बालक, माताओं के स्तन सूखे क्यों? ऐ देश के नेताओं बोलो, जीवित कंकाल हुआ नर क्यो?

गौरव गरिमा भारत की थी, वह लुप्त हुई क्यों तुम बोलो। भ्रष्टाचारों के अब्डों को, क्यों पनाह दी तुम ही बोलो। भारत की रक्षा कर न सके, क्यों तुम बोलो तुम ही बोलो। गद्दारों की गद्दारी पर, आँखे मूँदी क्यों तुम बोलो।

वीरों की पावन धारती पर, क्यों आँख उठाई गि)ों ने? क्यों छोड़ शक्ति की पूजा को, कायरता अपनाई तुमने। जननी के टुकड़े होते हैं, प्रस्तावों को तुम लिखते हो। क्यों देश द्रोहियों की रक्षा कर, निज पद की रक्षा करते हो। जननी का चीर हरण करते, क्यों लज्जा तुमको ना आती। देख तुम्हारी कायरता को, माता की ३टती है छाती। माताओं ने थे लाल दिये, कितनों ने था घर त्याग दिया। इस जननी पर हँसते हँसते, अपना तन मन धान वार दिया।

कितनों ने ३ांसी को चूमा, जेलों में जीवन काट दिया। इसकी खातिर ललनाओं ने, मांगों को अपनी पोंछ लिया। क्यों भूले राम शिवा राणा, क्यों विस्मिल शेखर को भूले। पद्मनियों के जौहर को तुम, क्या सोंच समझ कर हो भूले।

लाल भगत सुखदेव गुरू से, कितनों ने ही था प्राण दिया। अपने खूं से सींच राष्ट्र को, जनता को था संदेश दिया। मातृभूमि के इस बन्धान को, हम तेा आजाद कर जायेंगे। स्वतंत्रता की इस वेदी पर, हँसते हँसते चढ़ जायेंगे।

इन सब बलिदानों के बदले, पाया खण्डित आजादी को। देश के नेताओं बोलो तो, खंडित करते हो क्यों इसको?

2ण

तुम जा कर देश विदेशों में, चाहो तुम होना सम्मानित। ना जान सके उनकी पीड़ा, जिनके कारण तुम सम्मानित।

अपमानित कर भूखी जनता, कब तक सम्मानित होवोगे? मानव धार्म भूल कर अपना, कब तक उन्हें दुत्कारोगे?

तुम जाल ३ेंक कर जनता पर, नित शोषण उनका करते हो। देने को नारे देते हो, स्वागत अपना करवाते हो।

मजदूरों की मजदूरी पर, तुमको तो तरस न आता है। कर्मों को करता जाता वह, गिर पड़कर वह उठ जाता है। वह प्रीति रीति की भूल डगर, बढ़ता वह बढ़ता जाता है।

श्रम से बहती बूंदो को लख, हर्षाता वह हर्षाता है। दुख की बातों को भुला भुला, जोड़ा सब श्रम से नाता है।

जिनके कारण सम्मानित हो, नहीं भूल उन्हें जाना तुम। पीड़ा को हरपल ढोते जो, मोड़ न लेना मुख उनसे तुम।

3ण

आश्वासन देकर विकास का, नेता कर खूब लगाता है। जनता जो भोली हँस हँस कर, मूरख वह खूब बनाता है। मदिरा पर टैक्स लेता है, जूए पर टैक्स लेता है। चकलों पर टैक्स लेता है, नारी की अस्मत लेता है।

घातक बीमारी की जननी, तम्माखू पर कर लेता है। क्या पाप बचे ना इस जग में, सबसे वह कर को लेता है। मदिरा से घर लुटते देखो, जो लुटा रहा मजदूरी को। नवजात शिशू को ले रोती, वह पेट बांधा कर पत्नी को।

इज्जत अपनी बचा न पाती, मजबूरी को रोते देखो। मासूम सिसकते देखो तुम, भारत की कलियों को निरखो। उपदेश दे रहे तुम उनको, जो मांग रहे रोटी को हैं। कैसी हवा बह रही देखो, जो घुटी घुटी सी जाती है।

दुख दरिद्रता में पलता वह, धूएं को गले लगाता है। तम्बाकू को वह पीता है, फिर रातों को वह जगता है। मन घूम रहा कुंठाओं से, वह छोड़ प्रकृति के आंचल को। निज मजबूरी को रोता है, तज जीवन में आशाओं को। देखा रहा खोया खोया सा, पथराई सी आंखों को ले। विगत याद कर अश्रु बहाता, सूखी अपनी आंखो को ले। जो आज नशे में डूबा है, बोलो कारण है कौन हुआ? कर का लालच जो ले डूबा, इसका हत्यारा कौन हुआ?

4ण

नेताओं के टोल निकलते, आशाओं के बोल निकलते। झाक रहा नर हुआ बाबला, देख रहा अरमान टूटते। जनता ढूंढ़े उस नेता को, जीवन में सर्वस्व लुटाये। आँख के आंसू उसे निहारें, उसको अपने गले लगाये।

ठगी सदा जाती यह जनता, सीडी बन जाती नेता की। कर उपयोग इसी जनता का, खूब रौंदता छाती इसकी। बड़े बड़े औषधा आलय हैं, ट्रस्ट अनेकों बने हुए हैं। पर गरीब की सुनते ना हैं, डाक्टर निर्मम बने हुए हैं।

इस दरिद्र जीवन को देकर, मानव का उपहास उड़ा कर। उद्घाटन कर रहे रैलियां, जख्मों को तुम मिर्च लगा कर। देश के नेताओं बोलो तो, अपने जी को कुछ खोलो तो। जो करते विश्वास तुम्हीं पर, जीवन में रस कुछ घोलो तो।

बहुत अभागे ऐसे भी हैं, जुटा न पाते अपनी रोटी। मादक द्रव्यों में ग्रसते वह, घर पर सबकी अखियां रोती। जीने का आश्वासन देते, कर को लगा नशा तुम देते। आदर्शों की रचना कर कर, अपना मतलब सीधाा करते।

बोझा ढोते नर को देखा, उसको भूखा सोते देखा। मार तमाचा इस जग में हा, तन को मैनें बिकते देखा। महलों में सब भोग रहे सुख, चिन्ता केवल अपनी करते। दुख की दारूण अग्नि में जल, सड़को पर भी नर हैं मिटते। इस ईश्वर से पूछा रो रो, क्यों इतना क्रन्दन जगती पर। गूंज उठी फिर लुप्त हो गई, मिला न हमको कोई उत्तर। पंख लगा कर उड़ा गगन में, आशाओं के दीप जलाकर। तुमको ना पहचान सका मैं, गिरा अचानक इस धारती पर।

पीड़ाओं का सागर है यह, इनकी आंखों में तुम झांको। पर पीड़ा को गले लगा कर, जीवन का कुछ मतलब समझो। छोटे से इस जीवन में तुम, अंहकार को खूब बढ़ाते। धान दौलत को खूब लूटते, अपनों से ना मेल बढ़ाते।

ना दुखियों को गले लगाया, ना रस मिल पायेगा जग में। खाली हाथ यहाँ आये हो, खाली जाओगे जीवन में। सुख दुख की इस छाया में है, सारे जग का खेल चल रहा। खड़ा एकाकी सा इस जग में, मैं आंसू का जाल बुन रहा।

5ण

छोटे से घोंसले की, पंछी को है जरूरत। कुछ काम की नहीं है, उसको बड़ी इमारत।

क्यों कर रहे हैं शोषण, प्रपंच रच रहे हैं। ताले लगे किलों में, क्या काम आ रहे हैं।

सब स्वार्थ में डूबे, किसको फिकर किसी की। रीते घड़े पड़े हैं, सुधि है नहीं किसी की।

सब प्रेम को चहाते, पर प्रेम दे न पाते। संघर्ष करते बीता, जीवन में कुछ न पाते।

जीवन बुलन्द कर तू, नाहक कभी न डरना। मुस्काहटों को ले, आकाश में विचरना। 6ण

क्यों आज नशे तुम डूबे, क्यों होश को खो कर मस्त हुए। जब तड़ रही सारी जनता, क्यों तड़न से तुम दूर हुए। देखो वह यौवन को खो कर, लाठी को चलता टेक टेक। विगती स्मृतियों में खोकर, दुख में रो लेता बार एक।

देखो वह शिशु को लिपटाये, लज्जा विहीन हो इस जग में। झोली को फैला कर अपनी, वह भीख मांगती मग मग में। गहने वस्त्रों से कर श्रृंगार, कैसे वह इठलाती जाती। इस ओर देख नन्हें शिशु को, वह पेट पकड़ कर रह जाती।

पी पी कर और पिला कर वह , देखो वह नाच रही कैसे? नयनों के तीर चला मुस्का, पीती गम को देखो कैसे? मग में मिट्टी में मिला हुआ, देखो वह मानव का पुतला। कैसे हाथों को मार रहा, जीवित अपने जीवन को जला।

देखो वह चलता डगर डगर, अपने सिर पर बोझा ढोकर। पर उसके बच्चे भूखे हैं, अखियां उनकी झरती झरझर। हा हाय विधाता जन्म दिया, क्यों हमको तूने इस जग में। इस दुनिया में हम तड़ रहे, अधिकार न क्या हमको जग में।

7ण

अभिशाप भरा जीवन ले कर, वह जग में घूमा करते हैं। माँ के सूखे स्तन को ले कर, शिशु बिलख बिलख कर रोते है। पेट अग्नि से पीड़ित हो कर, कर्मो को कोसा करते हैं। वस्त्र मिले ना भरी ठण्ड में, निशदिन भूखे सोते हैं।

सूखे हैं नर के हाड़ मांस, पत्थर सी आंखों से देखे। ऐसी दुर्लभ योनी को पा, वह लुटती इज्जत को देखे। करी कल्पना आजादी की, यह कैसी आजादी आई? दे दो टैक्स पीओ शराब, नेताओं ने लूट मचाई। विस्फोट यहाँ पर होते हैं, महलों मे जश्न मनाते हैं। वह पड़ा झोपड़ी में रोता, बस उसके आंसू गिरते हैं। प्रेम गीत वह गा न पाया, जीवन में उल्लास न आया। ठगा रहा जाता वह हरपल, जीवन में हर क्षण दुख पाया।

अन्न भूख ज्वाला में फंस कर, वह विलख विलख कर रोता है। विवश बेचारा हुआ कितना, वह पेट पकड़ कर सोता है।

8ण

नेता वह जो पर दुख देखे, सब अपने दुख को रोते हैं। निज का दर्द दिखा औरों को, दुख जग को देते फिरते हैं। वह देखो कर रहा वधिक वधा, मजबूरी दर्शाता अपनी। वधिक हाथ में पड़ देखों, कैसे लाती आंखों में पानी।

पथ पर देखो भीख माँगता, करूण कहानी कहता रहता। कौन समझता उसके दुख को, वह कह कह कर ही रह जाता। कर श्रृंगार अनेंको देखो, इठलाती सी वह जाती है। इधार हाय नारी वह देखो, तन अपना ढक ना पाती है।

माँ के सूखे स्तन को ले, करता जब शिशु क्रन्दन है। तब कौन लाभ ले अवसर का, सौदे तन के वह करता है। लज्जा को दे वह तिलांजली, बाहों में उसके सोती है। मार तमाचा इस जग को वह, अपना तन अर्पण करती।

जिस नारी की पूजा होती, इस समस्त भारत के अन्दर। वही नग्न हो कर वह नारी, इज्जत को देती सड़कों पर। दुनिया की है रीति निराली, नहीं जानता कोई जग में। अपने अपने दुखड़े रो कर, सब ही जीते हैं इस जग में। 9ण

जल रही चिता मैं देख रहा, अरमानों का भण्डार छिपा। चेतन अब जड़ में लुप्त हुआ, सुख दुख का बोधा समाप्त हुआ।

जिस बलिष्ठ तन की पूजा, करते थे सब नर नारी मिल। वह आज सिलगता शोलों में, इक शून्य भरी दुनिया में मिल।

राम कृष्ण बु) जैसे ज्ञानी, बच न सके इन लपटों में। किया समर्पण यहाँ सभी ने, बस न चला इन लपटों में।

जोड़ जोड़ कर धान दौलत को, कहते थे दुनिया का मालिक। देख देख कर अपने बल को, बनते जाते थे जो आशिक।

रूप देखकर रूप सुन्दरी, शीश झुकाती थी लज्जा से। कर कटाक्ष नयनों से अपने, हृदय बींधा देती थी सबके।

जो कहते थे विलग न होंगे, साथ रहेंगे हम जीवन भर। गर्व हो गया चूर्ण सभी का, जलती इन लपटों में मिल कर।

10ण

अपनी पीड़ा से छुट कर तुम, जग की पीड़ाएँ भी देखो। तुम झांको और आँख में भी, अपने को ही तुम ना देखो। गले लगा लो लगा सको तो, जग की चोंटो से जो पीड़ित। व्याकुल हैं जो भूख भूख से, और हुआ तन उनका जर्जित।

ऋटे वस्त्र मजबूरी रोती, अस्मत नहीं बचा वह पाती। तन को झोंक डाल नर्क में, शिशु क्रन्दन को सुन वह रोती। दूधा दूधा पर दूधा नहीं हैं, सूखी छाती आँखे रोती। चेहरे पर वह ले मुस्काहट, इस जग में वह सौदा करती। श्रम की भट्टी में तप कर वह, चलता है देखो डगर डगर। कौन लुटेरा लूट रहा है, गिरते आंसू उसके झर झर। औरों को हार डाल जग में, खुद भूखा वह सो जाता है। कर्मों से सब कुछ मिलता है, सन्तोष सदा कर लेता है।

अंधियारी ठंडी रातों में, ना गर्मी दीपक दे पाता। अभिशाप बने इस जीवन में, वह सिमट सिमट कर रह जाता। देख क्षुधा पीड़ित बच्चों को, नारी भी उसकी रोती है। अपनी मजबूरी देख देख, ऋटती उसकी भी छाती है।

प्रेम बहा दो दुखित जगत में, दुखी हृदय को गले लगा लो। इस थोड़े से जीवन को जी, अपना सौरभ पूर्ण लुटा लो।

11ण

जग को पीड़ा से त्रस्त देख, घुटता मन कैसे समझाऊँ। नित देख कहानी नई नई, गाऊँ क्या समझ नहीं पाऊँ। सो रहा भूख से कोई नर, मजबूरी से वह बेबस है। कोई न जा कर आंसू पोंछे, घुटता वह घुटता जाता है।

मस्त हुआ कोई मस्ती में, छनक छूम में मस्त हो रहा। नहीं फ्रिक दुनिया की करता, बनकर मतबाला डोल रहा। नेता का करती मान खूब, जनता भूखी प्यासी मर मर। शब्दजाल में उन्हें ऋंसाता, पले दरिद्रता में जीवन भर।

झूठे नारे देते रहते, शोषण हरपल करते रहते। अनदेखी कर पीड़ाओं की, खूब घुटाले करते रहते। आस लगा कर चुनती जनता, छल उनसे नित करते रहते। मीठे आश्वासन देते यह, घर अपना यह भरते रहते। 12ण

आज सुनोगे गीत यही तुम, जिसको सुन कर अंखियां रोये। अन्न जुटा ना पाते अपना, अपनी किस्मत को वह ढोये। दुर्लभ योनी नर्क भोगता, भरी दुपहरी नर को ढोता। घर के आंगन में शिशु रोता, भूखा रहता पेट न भरता।

टे वस्त्र नारी के तन पर, घर भूखा करता है क्रन्दन। कहाँ छिपे हमदर्द हमारे, पूछें मिटा न पाये क्रन्दन। कर्मो का क्या लेखा जोखा, समझे नहीं निरीह बने है। पशु सा जीवन जीते रहते, बेबस हो मजबूर बने।

मानवता का पाठ पढ़ाते, आँखे रोती देख न पाते। नर्क भोगते इस जीवन में, अंधियारी गलियों में रहते। ढोग रचाते प्रेम भुलाते, सुधाा प्रेम रस एक सहारा। प्यार बांट लो रस जीवन का, फ़ल होय फ़िर जीवन सारा।

13ण

ऐ मानव के अस्थिपिंजर, अपने मुँह से कुछ बोलो तो? नेत्र तुम्हारे धासक गये क्यों, गाल तुम्हारे पिचक गये क्यो?

लूटा मधुमास तुम्हारा किसने, मांस तुम्हारा सूख गया क्यों? तड़फ़ रहे तेरे बच्चे क्यों, मांग रहे रोटी तुझसे क्यों?

टे वस्त्र नारी पहने क्यों, इज्जत को अपनी बेचे क्यों? मानवता की हंसी उड़ाने, मेरी ओर निहार रहे क्यों?

लेकर जन्म धारा पर तूने, इतनी भारी गलती की क्यों? किसने तुमको किया भिखारी, तू प्रतिपल शोषित होता क्यों?

दुर्लभ कहते जिस योनी को, वह तुमको अभिशाप हुई क्यों? ऐ मानव के अस्थिपिंजर, अपने मुँह से कुछ बोलो तो?

14ण

नजर पड़ी जो हाय किसी की, वृक्ष आज कुम्हलाया है। देता रहा जनम भर छाया, वही आज झुलसाया है। रैन बसेरा जो करते थे, मधाुर मधाुर संगीत सुना कर। वह पंछी कित हाय उड़ गये, इसी वृक्ष को ठूठ बना कर।

साथी सब पीछा छोड़ गये, दुख ने पर साथ नहीं छोड़ा। आया बसन्त पतझड़ सा बन, आशाओं ने नाता तोड़ा। अब तो जीवन में कांटे है, मन कांटो से अब डरता क्या? जब लुप्त हुई मुस्काहट तब, मन अब भी करे प्रतिक्षा क्या?

अन्धाकार ही अन्धाकार हो, चाहे हो ना कभी सुबेरा। साहस तज ना तू बढ़ता जा, पौरूष दिखा नहीं तू हारा। जीवन में हर क्षण दुख पाया, खुद रो सबका जी बहलाया। अपने उजड़े हुए बाग में, झूठा आस का महल बनाया।

सब आशाओं को तज तू, देख रहा खोया सा नभ को। साथी नहीं कोई तेरा अब, तू भूल रहा अपनी सुधा को। उस पार क्षितिज के देख रहा, सूरज की ढलती किरणों को। इस ओर बुझा कर मन अपना, देख रहा मिटती आशा को।

दर्द छिपा जो अन्तस्थल में, कौन पढ़ेगा इसको जग में? दुख के सागर में जो डूबा, कौन निकालेगा इस जग में? यहाँ नियति हुई अपनी अपनी, बनते मिटते रहते हैं सब। पर प्यार बांटता जो जग में, वह ही बन जाता उसका रब।

थर थर डाली कांप रही है, नग्न कर गये पत्ते सारे। लुटा खजाना जीवन का सब, धारती माँ की गोद पुकारे। 15ण

वह देखो फ़िर मुस्करा दिये भूखे थे

भिखमंगा हँस दिये जिन पर

साथ में ेंक कर अपनी जान तक

बच्चे कुछ पैसे निछावर करती थी

औरत भिखारिन ने रो रहे थे

DESH KE NETAON

सब भूखे हैं देखा पेट पर हाथ था

कातर दृष्टि से अपने अंगो को मां को देखते थे

देखते हैं जो खुले थे रोकर

मांगते हैं अपनी लाज को सहमकर

झोली ?ैलाकर छिपाने के लिये ममता जाग पड़ी

गिड़गिड़ाकर जैसे ही उसने रोने लगी

अरे! साड़ी का ?वक ?वक कर

यह क्या? एक छोर बेबसी पर

औरत का तन खींचा मजबूरी पर

दीख रहा है वह ?ट गई और

?टे वस्त्रों में उसका मांसल शरीर अन्धापति

झांक रहा है गदराया यौवन देख न सका।

उसकी गरीबी ने नग्न जांघे क्या बीत रही है

यौवन के चढ़ाव ने खुले स्तन क्या गुजर रही है

लोगों को उसकी बेबसी पर उसकी औरत पर

आकर्षित किया हँस पड़े उसके बच्चो पर

अपनी ओर यह सब वह गा रहा था।

वह रूके भिखारिन को मस्त होकर

उसके अंगो को अच्छा न लगा अपनी धुन में

खूब देखा उसने देखे बाबू पैसा दे

जी भर देखा अपने बच्चे बाबू पैसा... 16ए

चाह उड़ू. पर, पर किसने काटे। जिन्दगी में हम तो रहे अभागे।

घर न ठिकाना न दर कोई मेरा। घूमा सदा मैं न आया सबेरा।

BY CHANDRA PRABHAKAR

कैसी नियति है आये यहाँ पर। नाचे इशारों पे रोकर हँस कर।

देखी प्रतीक्षा बहारें न आई। क्यों जिन्दगी न हमें रास आई।

शिकवे न टूटे कभी जिन्दगी से। लड़ते रहे हम गमें जिन्दगी से।

मिला दुख यदि तो गुनाहगार हम है। शिकवों का अम्बार क्या जिन्दगी है?

तन न सम्भलता यादें ले रोता। चाहत लिये मन तू बैचेन होता।

यह बादल ?टेंगे गमों के कभी। प्रतीक्षा के बादल छटेंगे कभी।

चाहत के स्वर है मिलते किसी से। तभी तक होता है साथ किसी से।

न बैचेन मन हो न कोई किसी का। मेला है दो दिन बस जिन्दगी का।

17ए

याद आ रही उन वीरों की, ?ांसी पर जो झूले थे। स्वतंत्र करने मातृभूमि को, कफन बांधा कर निकले थे। सुखदेव गुरू भगत सिंह ने, चूमा था इस ?न्दे को। क्रान्तिदूत विस्मल शेखर ने, प्राण दिये थे जननी को। अनगिनत शहीदों ने खूं से, सींच दिया था भारत को। देश प्रेम पर मिटे शलभ से, स्वतन्त्रता को पाने को। सबके दिल में एक चाह थी, हम होगे आजाद कभी। गौरव से मस्तक ऊँचा कर, हम होंगे खुशहाल कभी।

परन्तु आज भी मानवता, दानवता में है पनप रही। टोली भूखे भिखमंगों की, सड़कों पर है घूम रही। जनता भूखी है तड़ रही, क्रन्दन कर बच्चे रोते हैं। इस क्षुधाा बुझाने की खातिर, नारी भी अस्मत देती है।

पड़ रहे अकाल अनेंको हैं, तन ढकने को है वस्त्र नहीं। इस जीवन से है मृत्यु भली, जब खाने को है अन्न नहीं। संकल्प करो पूरे वीरों के, ले शपथ प्रतिज्ञा आज करो। ऐ सिंह सपूतों जाग उठो, भारत के दुख को दूर करो।

18ए

यदि करने को कुछ नहीं यहाँ, तो जीवन में क्या पाओगे? जीवन नदिया बही जा रही, तुम बीच भंवर में डूबोगे। नियति नियति को गाकर तुम, अपने कर्मों को ?ोड़ रहे हो। कर्मों से बचकर जीवन में, किस मारग को ढूंढ रहे हो।

तीखी समझ करो तुम अपनी, पोंछो तुम आंखो का पानी। जीवन का संग्राम छिड़ा है, यहाँ सुनाओ कर्म कहानी। बेगाने से मत घूमो तुम, जीवन की सरगम को गाओ। पीड़ित जग की कुछ पीड़ा हर, जीवन को सुख देंते जाओ।

सेवा का व्रत लो जीवन में, सेवा करते तुम खो जाओ। उलझे जीवन को सुलझाओ, अपने आंसू ना ढरकाओ। यहाँ राम और रावण सब है, इन सबको तो तुम पहचानो। कर्म भूमि के तुम यो)ा बन, पाप पुण्य को तुम पहचानो। इस विशाल धारती को देखो, कैसे शून्य में घूम रही है। धारती माँ को तुम पहचानो, कर्मविमुख ना यह होती है। सब मिट जाना जग के अन्दर, जानते है सब इन बातों को। पर कर्म विमुख होना मत, कर्मठ जीवन दे दो जग को।

क्या पाना है क्या खोना है, खेल चल रहा सब इस जग में। प्रेम पुजारी बनकर ही तुम, खो जाओ इस सुन्दर जग में। पीड़ित जग अपनी चाहत से, अपनी चाहत का दान करो। अपने इस कर्मठ जीवन से, कुछ इस जग का कल्याण करो।

जो गम की गलियों में डूबे, मिलता ही नहीं किनारा है। धौर्य उन्हें दे दो प्यारे, कर्मठ जीवन को जीना है। जीवन जीयो कर्मठ बनकर, मत हारो हिम्मत को प्यारे। साहस का बिगुल बजाकर तुम, जीवन को जीवन दो प्यारे।

19ण

मत करो प्रतीक्षा रूको नहीं, जीवन में बढ़ते जाओ। पैरों में जब तक ताकत है, जग में तुम चलते जाओ। चलते चलते जीवन को तुम, जीवन को जीवन दे जाओ। चलते चलते जग प्रांगण में, यादें दे कर खो जाओ।

जग में हमको चलना है बस, यही समझ कर चलना है। जग मांग रहा हमसे कुछ है, हमको भी कुछ देना है। मातृभूमि गौरान्वित कर, प्रतिपल चलते जाना है। जिस मिट्टी में जन्म लिया, मिलना हमको उसमें है।

छीन रहे हमसे खुशियाँ, उनको हमें मिटाना है। जो रोते उन्हें हँसाना है, संग उन्हीं के गाना है। कांटो के जीवन से हटकर, प्रतिपल बढ़ते जाना है। दूर भगा कर घृणा भाव को, प्रेम पाठ पढ़ाना है। 20ण

जननी मेरा तुमको प्रणाम, बोलूँ क्या मूक हुई कविता। मैं कर न सका पूजा तेरी, यह तीर हृदय में है चुभता। जीवन की टेढ़ी राहों पर, मैं उलझ गया पथ भूल गया। मुझको दर्शादो मारग तुम, हे जननी मैं तो भटक गया।

तुझको अर्पित हो सब जननी, सम्बल दे तुझ पथ तक आऊँ। ज्योति जल रही जो निज मन में, तुझ चरणों में उसे चढ़ाऊँ। मस्ती में बढ़ता जाऊँ मैं, आगे आगे चलता जाऊँ। आशा के सागर को लेकर, मैं झूम झूम कर लहराऊँ।

तेरी लीला मैं देख रहा, पर्वत वृक्षों से सजी हुई। डार डार और पात पात, मस्ती में सब रंगीन हुई। नृत्य कर रही यहाँ प्रकृति, सबके मन को हर्षित करके। पक्षी भी कलरब करते हैं, वह तेरे स्वर में खो कर के।

जीऊँ जब तक ले चरण धूलि, मैं मस्तक पर सदा लगाऊँ। तेरी माटी में मैं खेला, बस तुझमें ही मैं मिल जाऊँ।

21ण

पूछा ही नहीं क्यों रो रहे, यह नीर निकलते हैं झर झर। ुवक ुवक कर हम रोते हैं, कहने को था ना कुछ अब पर। चलता, चला जाता ही नहीं, गिरता मगर गिर पाता नहीं। दुनिया यह कैसी आन बसा, समझा न समझ आती ही नही।

शिकवा तुम मुझसे करते हो, शिकवा मैं भी तुमसे करता। जीवन का मतलब ना समझा, सारा जीवन योंही बीता। इस मृगमरीचिका में ंसकर, उपदेशों से भी मन ऊबा। सेवा के व्रत से वंचित हो, मन रोता तू किसमें डूबा।

सब ओर भूख है भूख भूख, सकल विश्व इससे व्याकुल है। पेट हाथ रख यहाँ भागते, जंग जग अनूठा यह छिड़ा है। कैसे मन समझाऊँ अपना, यहाँ न लगता कोई अपना। एकाकी से इस जीवन में, किसे कहूँ हो जाये अपना। 22ण

सब विवश है भूख आगे, ज्ञान हो जाता पराजित। कांटा आटे में छिपकर, ज्ञान को करता पराजित। दुनिया तेरी में आये, क्यों हुए यहाँ पर उदास। पीड़ितों की देख पीड़ा, दिल है रोता मन उदास।

कूटे वह दिन में पत्थर, ठेलो पर बोझा ढोता। पेट की अग्नि में जलता, ि भी हाय मूक रहता। ढो रहा नर को ही नर है, चाहता जग ईश क्या है? जन्म देकर इस धारा पर, खेलता यह खेल क्या है।

कर प्रकाशित ज्ञान दीपक, क्यों अंधोरे में छिपा है। ले रहा जग सान्त्वना, बिना इसके तू बुझा है। वासनाएँ साथ ले कर, करे ूर है नर जग में। खुद को भुलाता इसी में, न राह पाता है मग में।

जीवमय संसार लीला, देखकर हतप्रद हुआ हूँ। बनने मिटने की कहानी, छला मैं इसमें गया हूँ। कहें दुलर्भ नर की योनी, गाते है महिमा पुराण। भूख की भट्टी में जलकर, क्यों हो रहा है निष्प्राण।

23ण

पथ पर खड़ा देखता वह, नभ छूते भवनों को वह। ठिठुर रहा भरी ठण्ड में, आश्रय कहीं न पाता वह। चलता वह संभल संभल कर, आशा को संग संजोकर। विवश हुआ दिल रोता है, क्यों रूठी मंजिल और घर।

करती है खिलवाड़ नियति, वह रो भी ना पाता है। अभिशाप भरा जीवन ले, कंकाल बना चलता है। दूधा मांगते बच्चे हैं, सूखे स्तन ले रोती वह। वह दारिद्र में जीती है, इससे निकल न पाती वह।

यहाँ टूटते कितने दिल, बरस रहे नयना झर झर। पोछों आंसू बाट प्रेम, चैन मिले जाना उस घर। 24ण

यह चमन खिले खिलता ही रहे, खिलने में ही इसकी शोभा। पुष्पों से डाली लदी रहे, मिल करे वन्दना जब शोभा। जिसने पूजा इस माटी को, वह राष्ट्र भक्त कहलाया है। तिलतिल जलकर फिर भी हँसकर, मारग जग को दर्शाया है।

व्यक्तित्व तुम्हारा विकसित हो, लगाता गले यह सदा रहा। जिसने पूजा इस माटी को, उसके दिल से है प्यार बहा। राष्ट्र छोड़ जाकर विदेश, में भी जो नर बस जाते हैं। इसकी माटी तृस्कृत कर, क्या सुख को वह पा पाते है?

त्यागी का त्याग सदा ऊँचा, इस जीवन में कुछ तो झाकों। पीड़ित जो अपनी पीड़ा से, उनके अन्तस में भी झाको। यह चमन सभी का है प्यारे, इसके फल को तुम भी खाओ। दुर्बुी) वासना में पड़कर, मत दुखी जनों को तड़ाओ।

25ण

जीवन सरिता वही जा रही, मधुर मधुर सुपनों में खोकर। मीठे मीठे गीत गा रही, अपनी लहरों में लय होकर। नहीं किसी से कुछ भी कहती, बही जा रही सुधा बुधा खो कर। कितने पथ से यह गुजरी है, नहीं बना इसका कोई घर।

आते है सुनसान बियावन, रात अन्धोरी आती है। जब चट्टाने आती है तब, उनसे भी टकराती है। ढूंढ रही अपनी मंजिल को, दिल में अपने व्यथा छिपाये। आस लिये यह बही जा रही, नहीं पता कब लय हो जाये। 26ण

ज्वालामुखी के गर्भ में, घुट रही चिन्गारियाँ है। कुछ करें हम सोचते है, बीत जाती जिन्दगी है। कल्पना के पंख पर उड़, स्वप्न आशा के संजोते। बीत जाती जिन्दगी पर, ना कभी हम छोर पाते।

दृष्टि अपनी लक्ष्य अपना, सब बढ़ते मार्ग में है। तृप्ति हो जाती नहीं पर, बीत जाती जिन्दगी है। सुधिा पड़ी किसको किसी की, स्वार्थ में डूबे हुए है। दे रहे उपदेश जग को , बीत जाती जिन्दगी है।

लेखनी चलती कवि की, व्यथा दिल की निकलती है। अश्रु से कृति सींचता वह, बीत जाती जिन्दगी है।

27ण

तुमको प्रसन्न करने को हम, प्रतिक्षण ही तो मुस्काते हैं। ऐसे में कहो तुम क्यों रूठे, यह भारी क्षण ना कटते हैं। जो चाहे सजा दे दे हमें, ऐसी न गुजारो तुम हम पर। मायूस हमें क्यों करते हो, हँस दो तो यह कट जाये फर।

देखो इस झील सुहानी को, बातें सब हँस हँस करते है। ऐसे में तेरी मायूसी, दिल को बैचेनी देती है। इन बातों को सब ही जाने, यह दुनिया आनी जानी है। छोड़ो चिन्ता इस दुनिया की, इसकी तो यही कहानी है।

रूठे से रहोगे तुम हमसे, आये हैं यहाँ मायूसी में। आयेगा मजा न बहारों का, जायेंगे हम मायूसी में। दिल मेरा है बेताब हुआ, दो शब्द जवां पर ले आओ। उतप्त हृदय के लिये आप, कुछ शीतल बूंदे बरसाओ। मुस्कादो यहाँ बहारों में, तब हो जाये रंगीन समा।

28ण

ऐ राष्ट्र समर्पित यह जीवन, कर चला तुम्हारे चरणों में। मन में मेरे अब यही जगा, मैं जाऊँ समा तुझ चरणों में। जीवन के सब तज लाभों को, मन में यह हूक उठी मेरे। जो ज्योति जल रही मेरे में, वह जाय समा तेरे अन्दर।

आज तज चला प्रिया प्यार मैं, बांधा कफन का सिर सेहरा मैं। तोड़ चला उन जंजीरो को, बांधा रही थी मुझको मग में। नश्वर जग से प्रीति करूँ क्या, नाशवान सब कुछ जीवन में। ऐ जननी मिट जाऊँ शलभ सा, चाह यही मेरे जीवन में।

29ण

प्रिय भूषण हैं हम भारत के, भारत देश महान। इसकी हम रक्षा करने को, हो सकते बलिदान। दशों दिशाओं में होता है, इसका ही गुणगान। भारत के हम लाल, भारत देश महान।

चीन पाक के हम गुण्डों को, हम ही ठीक बनायेगे। आजादी का कर रहे हनन, उनको पाठ पढ़ायेंगे। जननी की रक्षा करने को, दे देंगे हम प्रान। भारत की हम शान, भारत देश महान।

30ण

कौन आता है यहाँ पर, कौन जाता है यहाँ। संघर्ष जीवन का सदा, रूकता कभी न यहाँ। जिन्दगी की नाव पर हम, डूबते तैरे कभी। चाहता जाना वहाँ क्यों, कोई न पूछे कभी। किसको पता है, टूटते कितने यहाँ। जोर से उठे है बादल, उड़ते गरजते। अश्रु की बूंदो से लगते, जगत में वह बरसते।

दर्द से तो हम है सिंचित, बता होगा और क्या? जिन्दगी वीरान यह तो, अब प्रतीक्षा और क्या? चल रहा पर मैं निरन्तर, दुर्भाग्य कैसा यहाँ? कर सकूँ कुछ भी नहीं मैं, दर्द बिखरा है यहाँ।

अनन्त पथ के हैं मुसाफिर, जा चुके कितने यहाँ। स्वप्न गठरी बाँधा कर, खो चुके कितने यहाँ।

31ण

कौन किसी का है जग में, चलता सारा खेल यही है। शमा यहाँ पर रोशन होती, सदा पतंगा यहाँ जला है। जख्म दिये तुमने हमको जो, झेल नहीं मैं उनको पाता। टूटे दिल को थाम रहा मैं, उनकी यादों में मैं रोता।

स्वप्नवत सारी दुनिया है, सत्य मुझे संसार हुआ है। बरस रहे है मेघ धारा पर, फिर भी यह तन सूख रहा है। दिल मेरा बिचलित होता है, और फिसलती चाहत मेरी। बन बेगाने घूर रहे क्यों, डगर यही अनजानी मेरी।

लिये प्यार की झोली फिरता, घूम घूम कर जग में हारा। देख पतंगे ने दीपक को, किया समर्पित निज तन सारा। प्यार यही बस मिट जाना, नहीं शमा से घबराना है। पूर्ण यह होता जीवन का, जन्म मृत्यु को मिल जाना है।

घुटन कलेजे की ना देखे, कहूँ हाल यह जग ना बूझे। कहाँ भागता है जग सारा, अन्धाकार में कुछ ना सूझे। पीड़ाओं से पीड़ित जग में, मारग कोई नही सूझता। पियें ज्ञान के प्याले फिर भी, कंठ मेरा क्यों हाय सूखता। निष्ठुर

देख मुझे जी भर के, चाह बचे ना कोई बाकी। बहा जा रहा हूँ नदिया में, नहीं किनारा इसका साकी। बहते है हम नियति धार में, विवश यहाँ कल जाने क्या हो। प्रेम गीत तुम आज उठा लो, पता नहीं फिर कब मिलना हो।

32ण

जगत प्रयोजन नहीं दीखता, इसमें तू क्या चीज खोजता। आये जगत ने न कुछ बूझा, जाये जगत से न कुछ कहता। कैसी तड़फन है इस दिल में, खोज रहा जो वह न मिलता। सूख गये सब नीर आँख के, किस अँधियारे में छिप जाता।

अपनी अपनी यहाँ वासना, सभी इसी में भरमाते है। मिले न तुमसे हम जो प्रियतम, मेल नहीं हम कर पाते है। आशाओं के खण्डर पर हम, चलते निशदिन ही रहते है। नहीं मंजिलें मिलती हमको, टूट टूट कर रह जाते है।

चाहत है विश्राम करूँ मैं, पा पाता पर ना मैं इसको। जग में फैली पीड़ा लखकर, अज्ञात जगा देता मुझको। मंजिल जीवन की चलना है, चलते ही हमको जाना है। पाने खोने की दुनिया में, खेल खेल फिर मिट जाना है।

33ण

अन्तस्थल के दीपक तू जल, कर प्रकाश तू इस जगती पर। उबल रहा जग पीड़ाओं से, उनको तू ज्योतिर्मय दे कर। दुख की घूंटो को पी पी कर, कैसा हुआ भ्रमित यह मानव। निज को भूला मार्ग पता न, बना हुआ है कैसा दानव।

हे ईश्वर तुम प्रेम सिखा दो, अन्तर्मन में दीप जला दो। जीवन का मतलब समझा दो, भटक रहे मारग दर्शा दो। अन्तहीन मन उड़ता जाये, नहीं किनारा यह पा पाये। मन में मेरे समझ न आये, उड़े यह उड़ कहाँ को जाये। रचाया। विलख विलख कोई रोता है, और किसी को खूब हंसाया। अपने मन से ना चल पाऊँ, पत्थर दिल कैसे समझाऊँ। कैसी हाय विवशता है यह, चाहूँ प्रेमी बन खो जाऊँ।

दौड़ रहे सब दौड़ न कोई, दौड़ यही जी बहलाना है। थोड़े से इस जीवन को जी, इस दुनिया में खो जाना है।

34ण

शौक बन मिटते यहाँ पर, कुछ भी यहाँ पर है न थिर। चलता जा चलता ही जा, जिन्दगी यह है नहीं थिर। आ गले लग गीत गा ले, इस जगत से दिल लगा ले। गुजर कर तू इस रूर से, इस प्रकृति में लीन हो ले।

आँसुओं की इस धारा पर, ढेर बिखरे ही पड़े है। पूछने बाला न कोई, दिल यहाँ टूटे पड़े है। संजो कर आशा यहाँ हम, चल रहे नित हम यहाँ है। ले अधूरी यहाँ सरगम, गाते फिर भी जा रहे हैं।

जा रहें है सभी भागे, गीत न जीवन का मिलता। भूख की ज्वाला से पीड़ित, जग सारा जलता रहता। जगत अन्दर है प्रलोभन, चून कांटे में लगा है। हंस रहे प्रतिपल यहाँ पर, बैचेन दिल रो रहे है।

35ण

सूखे पत्ते तुम बनो, घूमों इस संसार में। जब उठाये यह हवा, तुम उड़ो आकाश में।

कुछ नहीं अपना यहाँ, जान लो संसार में। तन की मिट्टी कहेगी, थे कभी संसार में।

चल रहे या चलाता, कोई इस संसार में। फूल खिले और गिरें, कौन है अज्ञात में?

वश नहीं अपना यहाँ, जन्म लेते धारा पर। खेल नाटक कुछ समय का, लीन होते यहाँ पर।

न बनो कर्ता किसी के, समय का हो खिलौना। राजा या रंक जग में, सब यहाँ एक सुपना।

36ण

कुछ ठीक हुआ कुछ गलत हुआ, जीवन यह सारा बीत गया। प्यासी धारती की देख दशा, मेघों का दिल भी पिघल गया। चलते संभल संभल कर हैं, खा जाते फिर भी ठोकर हैं। चलता कुछ जोर नहीं अपना, हम समय मोहरे बनते हैं।

दिल जलता है आशा जलती, आशा में फिर भी जीते हैं। दिल चाहें जिसे भूलना यह, यादें लेकर हम रोते हैं। न काम किसी के हम आये, घुटते रहते इस जीवन में। तुम आँखों में ना झांक सके, इच्छाओं के फंस फन्दे में।

अपने गम किसे सुनाये हम, जब बिखर गई मेरी सरगम। जग माया में है सभी भ्रमित, तुम भी रूठे मेरे प्रियतम। आंखें यह खोज रही मेरी, यह सदा तुझे ही खोजेगी। यह नीर बहाकर यादें ले, पीड़ा को जीवित राखेगी।

37ण

गीत गा लें प्यार के दो, यह कटेगा जीवन सफर। घुटा सा मैं जा रहा हूँ, अपना ले हम सफर। अँधियारी रातें हुई, आस का दीपक बुझा है। कौन से कोने में लेकिन, नाम तेरा ही लिखा है।

थक गये हम चलते चलते, ना तमन्ना अब रही है। गिरेंगे हम किस जगह पर, कोई मंजिल अब नहीं है। देखले जी भर तुझी को, अब जा रहे हैं देख लें। ना मिलेंगे फिर कभी हम, कुछ ही मिले पल देख ले।आये यहाँ फिर चल दिये, खेल कैसा चल रहा है। देखते ही देखते यह, पल में पर्दा गिर रहा है। खेल खेले चाहा हमने, प्यार के हम रंग गेरें। रंग बदलते इस जगत में, अपना हम रंग बिखेरे।

शोर कैसा हर तरु यह, कोई हंसे रो रहा है। सभी यहाँ भागे जाते, कारंवा सब मिट रहा है।

38ण

कितने फूल यहाँ खिलते हैं, कितने ही मुरझा जाते है। मृगमरीचिका नहीं टूटती, उसमें ही हम खो जाते हैं। यह तेरा है यह मेरा है, लड़ते हैं दिन रात इसी में। फिरते भूखा पेट लिये हम, जीवन की सब साधा इसी में।

खो जाना है इस दुनिया में, नर भूखा यह खूब नाचता। इच्छाओं की गठरी लेकर, नित इसमें यह दबता रहता। प्यार मांगता है यह जीवन, वैर त्याग दो इस जीवन में। फूल खिलेंगे कदम कदम पर, खुशी जगेगी इस जीवन में।

39ण

आओ प्यार से चले हम तुम, मिल जुल कर हम कदम बढ़ाये। मातृभूमि की सेवा करते, इस माटी में लय हो जाये। पीड़ा से पीड़ित जो जग में, उनको भी हम गले लगाये। सेवा का ही व्रत लें जग में, इस अनन्त में लय हो जाये।

छोटा जीवन प्यार बहा ले, दुखियों को तू गले लगा ले। आंखो के शबनम से मोती, तू भी उनके साथ मिला ले। जीवन नदिया बही जा रही, कितने आये चले जायेंगे। करें समर्पण जो इस जग में, खुशियों से वह भर जायेंगे।

*तुलना नहीं सूर्य से तेरी, दीपक तो तू बन सकता है। जहाँ जहाँ पग घूमे तेरा, अन्धाकार को हर सकता है।*40ण

डगर है अनजान तो क्या, चलते चलते ही गिरे हम। अकेले हम हो गये है, इन्तजा किसकी करे हम। पैर में कांटे लगे हैं, जख्म दिल में हो गया है। पथिक हूँ अनजान पथ का, कहाँ गिरेंगे न पता है।

चलो जीवन की निशानी, ना लजाना तुम जबानी। इस जगत को रंग देना, खूं को ना कर देना पानी। तुम दुखी ना सृष्टि में हो, और भी हैं जो दुखी है। अपना ही रोना भूल तू, प्यार का भूखा जगत है।

ूल खिलते कंटको में, ूल पर ही भंवरे आते। प्रेम में डूबा जहाँ हैं, आस के हैं दीप जलते। पथिक है अनजान तो क्या, तेरे दिल में हैं उमंगे। प्रेम रस तू बाटता जा, चहुँ ओर घूमेगी तरंगे।

41ण

प्यार प्यास के प्यासे पंछी, प्यार प्यास में मिट जाते हैं। प्यार प्यास अतृप्त तृषा ले, अश्रुपान करते रहते हैं।

जीवन में स्नेह किया जिससे, क्या आस रखेंगे हम उससे। अणु अणु जिस पर न्यौछावर हो, बस प्रीति करेंगे हम उससे।

प्रतिकार मांगता दीपक क्या, जलता दीपक जलता रहता। इस प्रीति डगर की रीति अलग, जो चलता वह चलता रहता।

*दीपक प्रकाश में तम छंटता, जहाँ प्यार बसा दिल खिलता। जीवन का सब आनन्द छिपा, जो प्यार लिये बहता रहता।*42ण

ऐ मांझी दूर किनारा है, धीरे धीरे बढ़ते जाना। घिर रही घटाएँ काली हो, तुम धौर्य न अपना तज देना। कड़क रही बिजली नभ में, सब ओर अन्धोरा छाया है। देने तुमको आज चुनौती, सागर में कूां आया है।

अपने साहस को तू माँझी, आज परख ले इन लहरों में। तोड़ न तू दिल अपना मांझी, आज जूझ ले इन लहरों में। सागर के वक्षस्थल पर तू, निर्भय हो नौका चला रहा है। जान हथेली पर भी लेकर, मन्द मन्द मुस्करा रहा है।

बचपन के साथी याद आ रहे, बाट जोह रही प्रिया तेरी है। बच्चे का मुखड़ा धयान आ रहा, बिलख रही माता तेरी है। अरे अचानक आंसू यह क्यों, तू युग युग का निर्माता है। इस दुनिया में जलता है तू, जैसे दीपक इक जलता है।

नौका देख द्रवित होता तू, बहम हुआ क्यों तुझको मांझी। जूझा जो इन लहरों से है, उसने ही पाया कुछ मांझी। जो भी होगा अच्छा होगा, विश्वास बाँधा कर चल मांझी। कायरता से है मृत्यु भली, निज मन्जिल पाना तू मांझी।

जग हंस देगा हंस दोगे तुम, रोवोगे पास न आयेगा। कांटो में ूल खिला मांझी, जीवन सौरभमय होवेगा। यहाँ नियति हुई अपनी अपनी, चिंतित मांझी क्यों होता है। जो गिरा रहा वह उठा रहा, लहरों में बढ़ते जाना है।

43ण

बादल तैर रहे नभ पर, ढूंढ रहे है किसको पथ पर। देख धारा को जब वह तपती, वह नीर गिराते हैं झर झर। पीड़ा को मैं देख जगत की, ना रो पाती आंखे झर झर। पथरीली सी आखों को ले, चलता हूँ इस जग के अन्दर।इस अभाव पीड़ित दुनिया में, बता मुझे क्या होगा ईश्वर। व्याकुल सब और कातर है, बहे प्यार तू ऐसा दे कर। बरसो मेघ धारा पर बरसो, इस जग को खुशहाल बना दो। सूखी धारती प्यास बुझा दो, मुझको भी यह पाठ पढ़ा दो।

चलूँ डगर तेरी मैं जग में, प्यास जहाँ हो गिरूँ वहीं पर। बन पाये तुझ जैसा जीवन, नीर गिरें रि तो यह झर झर।

44ण

तू दीप बन कर जल जगत में, स्वयं जल रस्ता दिखा तू। पीड़ित हुए हैं जो यहाँ पर, उनकी पीड़ा को हर तू। खिलवाड़ मत करना जगत से, गले तुम सबको लगाना। मत और को दोषी बनाकर, झूठ का ना स्वांग रचना।

असमर्थ हम कैसे हुए है, हर नहीं क्यों पाते पीड़ा। आंखो के आंसू मैं देखू , क्या दिखाती नियति क्रीड़ा। जाये कहाँ हम इस जहाँ में, ढूंढ हम मुस्कान दे दे। पर स्वर नहीं वीणा उठाती, कौन जो स्वर को उठा दे।

45ण

पतझड़ में कैसे बसन्त का, तुमको मैं राग सुनाऊँ। बीता अतीत अब वर्तमान, यादें मैं भूल न पाऊँ। मुझको तुम ना दो प्यार भीख, मत मेरा उपहास करो। जायेंगे हम गुजर यहाँ से, मत इतना तिरस्कार करो।

वैभव तुझे मुबारक प्यारे, तकलीफों में जी लेंगे। मुँह से ऊ भी नहीं कहेंगे, घुट घुट कर हम रो लेंगे। तेरे तीखे तेवर से हम, सहम सहम से जाते हैं। जले विवशता की भट्टी में, तिल तिल कर हम मिटते है।

करूण कहानी तुझे सुनायें, तुमको पर अवकाश नही। कैसे ाँदू इस मन्जिल को, जीवन में उल्लास नहीं। तड़पा बहुत तुम्हारी खातिर, आँख उठा कर ना देखा। किया किनारा तुमने मुझसे, धोखा दिया न दिल देखा।46ण

पग पग पर तुम किया तिरस्कृत, ाि भी मैं कुछ ना बोला। तेरी दौलत का जलवा है, मुँह मैने कुछ ना खोला। निज सुख की खातिर विवश हुए, कैसे तुम बोझ उठाओ। अपनी किस्मत जैसी भी है, जाओ तुम मौज उड़ाओ।

परिवर्तित जग है यह हरपल, कभी न आंखें नम करना। जी लेंगे जैसे भी हम तो, चिन्ता तुम अपनी करना। ाूलों ालो कामना मेरी, तुम को दुख हम ना देंगे। जैसी भी गुजरेगी हम पर, गुजर बसर हम कर लेंगे।

47ण

झण्डा लेकर नौकरशाही, खूब ठाठ से घूम रही है। नहीं गुजारा हो रिश्वत बिन, जनता को वह चूस रही है। सेवा से हमको क्या लेना, मेवा हमको खूब चाहिये। सदा रोयेगे रोने बाले, बस हमको तो नोट चाहिये।

तनखा से है नहीं गुजारा, और बहुत कुछ हमें चाहिये। नौकरशाही हाय सड़ रही, उसको तो बस कफन चाहिये। सुन्दर सुपनों के भारत को, उसको यह है धूल चटाती। नौकरशाही भ्रष्ट देश की, लहू पी रही नहीं अघाती।

जुम्मेवारी को कोई भी, अपने ऊपर नहीं ओढ़ता। तीखे तेवर को दिखलाकर, सबकी वह है जेब लूटता। लिया समाजवाद का नारा, खुशहाली लाने की ठानी। बन गये लुटेरे हाय यही, मूंदी आंखे की मनमानी।

नोंच नोच कर हाय देश को, ये गि) खा रहे हैं यारो। नहीं काम तो मिले न पैसा, कुछ ऐसा जतन करो यारो। ऐसी भ्रष्टों की जमात पर, अब तुम ही तो गोली दागो। कर्मठता की ज्योति जा कर, जुम्मेदारी को लें जागो।पकड़ोगे। कर्तव्य विमुख हुआ ार्ज से, उनको तो अब तुम त्यागोगे। मिटाओ अब तो भ्रष्टाचार, मेरे देश तुम अब तो जागो। लहू पी रहे जो जनता का, करो सामना अब ना भागो।

नौकर भ्रष्टाचारी मिलकर, देश हाय यह लूट रहे है। संरक्षण सापों को देकर, डस जनता को यही रहे है। सभी नहीं मैं ऐसा कहता, पर भरमार इन्ही की अब तो। कुछ तो लाल सपूत देश के, करो मुक्त इनसे तुम अब तो।

48ण

आशा के सजा सजा सुपने, प्रतिपल हम चले जाते हैं। जीने की चाह लिये हम सब, रो लेते हैं हँस लेते हैं। नापी जीवन की गहराई, आँसूँ में डूब गई सारी। तुमको कैसे बता मनाऊँ, सूनी अँखियाँ हुई हमारी।

कुछ लिख लेते रो लेते हम, तम में चाहूँ ज्योति जलाऊँ। आंख आंख में झांका मैने, पर पीड़ा को ना हर पाऊँ। जीवन में ले दंश अनेकों, ीकी मुस्कान खिलाते है। छिपा विधाता देख रहा क्या, यह नीर हमारे गिरते हैं।

चीख रहा मैं क्यों चिल्लाता, लिये आस की गठरी रिता। नहीं राज पाया जीवन का, सुपनों के मैं महल बनाता। सब कुछ है अज्ञात यहाँ पर, कहाँ गिरेगे कौन जगह पर। थके यहाँ पर चलते चलते, शिकवा करें यहाँ हम किस पर।

किसका कौन यहाँ अपना है, सब बहते निज इच्छाओं में। दोष दूसरों को देते हम, स्वयं उलझते हम उलझन में। कुंठित मन को क्यों करता तू, समय समय के बोल यहाँ है। जिनकी कल तक कुछ कीमत थी, अब कुछ कीमत नहीं यहाँ है।

*बहती नदिया बह जा तू मन, नहीं ठिकाना कोई भी है। प्यार बांट होना विलीन हैं, चिन्ता क्या आगे सागर है।*49ण

छल कर तू लूटेगा मुझको, था पता नहीं मुझको निष्ठुर। पीछे तेरे मैं भाग रहा, बन पागल दुनिया के अन्दर। खोया मैं तेरे सुपनों में, दिया भुलावा तूने मुझको। वंचित किया प्यार से तूने, जाम पिला दे विष का मुझको।

यादें हम तेरी ही लेकर, आहुति निज की हम दे देंगे। जल जल कर इसी अग्नि में, जीवन खतम यहाँ कर देगे। तुमको हर साल मिले खुशियाँ, दुःखो से दूरी रहे सदा। आंखें तेरी यह नम ना हो , विनती करते हम यही सदा।

अपनी आंखो में आंसू है, बीतेगा जीवन क्षण भंगुर। खुशियों को तेरी देख देख, कर लेगे निज का गुजर बसर।

50ण

सूनी सृष्टि नहीं होती है, कोई भी आये जाये यहाँ। श्रृंगार नये नित करती यह, ना दुख से नेहा करे यहाँ। अवश हुआ कठपुतली सा बन, प्रकृति जीव यह हरपल नाचे। लेकर भूख प्यास पीड़ाएँ, खुशियों का फिर भी सृजन रचे।

दिल में जब तेरे ूल खिले, मन इस जग को सुन्दर कर दे। अनगिनत यहाँ रोती अखियाँ, कुछ में तो यहाँ चमक दे दे। थिर नहीं यहाँ जड़ चेतन है, सब बहता है बह जायेगा। बहते बहते तू गीत सुना, मन तेरा भी लग जायेगा।

*मन दीखे यहाँ दुखी कोई, उसको तू कंठ लगा लेना। कर सको जिन्दगी मे सेवा, उस व्रत को तुम भी ले लेना। सुख यहाँ मिलेगा तभी तुझे, दोगे तुम भी सुख औरों को। पुण्य ूलता तभी वृक्ष का, देता है ल जब औरो को।*51ण

आँसू मेरे गिरते झर झर, न कोई सुने रोती हरपल। मुझ अबला नारी को दे दुख, आँख दिखावे जलता है दिल। दुख देता कुछ भी ना कहती, घुट घुट कर दुख को मैं पीती। लेकर अबोधा शिशु गोदी में, दिन रात तड़ती मैं रहती।

जब नीर बहा बच्चा रोता, शोले से दिल में तब जलते। सुपने टूटे सब जीवन के, भूखा हम पेट लिये सोते। मेरा पति बना जुआरी है, नहीं सास मुझे दुलारी है। देखे देवर जेठ तमाशा, क्या नंद जेठानी ठानी है?

बने खून के प्यासे सब हैं, कैसे इनको लहू पिलाऊँ। विदा कर दिया बाबुल मुझको, बोल पिटारा कित से लाऊँ? मर जायेंगे दुख को पाते, साहस का झण्डा रकाते। अबला के जीवन को लेकर, बने जुआरी खुश हो लेते।

ूट ूट कर रोती मैं हूँ, तुम सबने क्यों करी लड़ाई? दिल का मेरा हाल न देखा, लाऊँ कित से धान हरजाई? दिल समझाती रो रो जावे, मनुआ कैसे धीर धारावे। बनी संगनी जीवन की मैं, मुझसे अब वह आंख चुरावे।

विवश रो रहा भूखा बच्चा, सूखा स्तन भी दूधा ना रहा। कैसे जीयूं निष्ठुर जग में, इस जीवन को ग्रहण लग रहा। लिये निराशा के बादल को, चला न जाये रूकते पग अब। सत्य भुला कर कुछ ना देखे, डूबेगा जीवन यह कब अब।

52ण

बीज जरूरी नहीं वृक्ष हो, ना अवरोधा मिटा पाये। प्रकृति सहेजे चले सदा, वह मंजिल को तब पाये। शीतल हो सब पतस मिटे जब, वृक्ष बने सुख दे जग को। क्षुधाा मिटाये वह तो सबकी, मीठे ंल वह दे सबको।पक्षी करें बसेरा उसमें, गीत खुशी के वह गायें। थके न वह सुख बाट जगत को, नहीं ंर्ज से हट पाये। बढ़े निरन्तर ना उदास हो, ना आंसू को ढरकाये। जग की सेवा करे निरन्तर, खुश इसमें ही हो जाये।

व्रत को अपने पूरा करते, झूम झूम कर लहराये। सदा रहे देता तू सुख को, सबके संग नाचे गाये। सेवा का व्रत नहीं छोड़ता, सीख जगत को सिखलाये। बढ़े निरन्तर जड़ पृथ्वी में, बढ़े सदा मन्जिल पाये।

टेढ़े मेढ़े रस्तों पर चल, जी उसका ना घबरायें। अथक परिश्रम करते करते, जल,ोतों से जुड़ जाये। जुड़ा हुआ वह नभ पृथ्वी से, जग उसकी महिमा गाये। धान्य धान्य तेरी गाथा को, सुने वही तरता जाये।

53ण

कैसे तेरे आंसू पोछूँ, इन हाथों में सामर्थ नहीं। चोटों पर चोटें लगती है, ऊ कहने का अधिाकार नहीं। चुपके चुपके रो लेता हूँ, ऐसा जीवन भी क्या जीवन। क्यों विवश बन इस धारती पर, जो टूंक सके ना नवजीवन।

सब कुछ उल्टा पुल्टा जग में, मैं समझ नहीं कुछ पाता हूँ। बेबस आंखों को देख देख, प्रतिपल हतप्रत हो जाता हूँ। तेरे शिकवों का अन्त नहीं, मेरी चाहत की थाह नही। दोनों का कैसे हो संगम, तू बता मुझें क्या राह नहीं।

54ण

दे रहे नारे सुहाने, भूल इनकी भूख को। थका श्रम भी पेट को ले, देखो नियति चक्र को। बच्चे बिलखते भूख से, शिशु तड़ते दूधा को। सूखे स्तन को लिये माँ, कर रही श्रम अन्न को।करते शोषण इन्हीं का, स्वप्न की दुनिया दिखा। दे रहे क्या हँस रहे हो, अवश यह ना दिल दुखा। बेहाल यह तन हो रहा, दुखों से सीना ंटा। अभिशप्त है जीवन यहाँ, मौत का भी डर हटा।

तुम सदा छलते रहे हो, ना जगे ना सुख हुआ। कह रहे आंसू हमारे, दिल यहाँ पत्थर हुआ।

55ण

आशायें ले तुमको चुनते, सम्मान दर्द को पी देते। कर्तव्य विमुख हो भूल सभी, नोटों की हविश लिये ंिरते। कितने ही देश विदेशों में, खाते खोले ना पेट भरा। मक्कार बने जूसा जग को, ना मिटा सके बहती मदिरा।

कितनी पीड़ा है दर्द यहाँ, इन सबको तुम्ही भुलाते हो। स्वार्थ के कूएँ में धाँस कर, अनजान बने तुम रहते हो। सुन्दर सुन्दर नारे दे कर, अरमां को खूब बढ़ाते हो। जाल ेंक कर जनता पर तुम, सब को ही खूब ंसाते हो।

56ण

आंखों में खोये सुपने हैं, जलती धारती गगन मौन है। कंठ मेरा अवरू) हुआ है, टूटी वीणा स्वर खोये है। जीवन ने धाोखा दिया हमें, आंसू आये ना पोंछ सके। यहाँ भीड़ में रहे अकेले, जग को ना पहचान सके।

*आशा के पंख लगा कर, उड़ा गगन में छोर न पाया। स्वार्थ भूख की पीड़ा लखकर, दिक् भ्रमित हुआ ना रो पाया। चहुँ ओर उठाता नजर यहाँ, चाहा जीवन को सुर दे दूँ। मुस्काहट रोते नयनों को, जग को हरियाली से भर दूँ।*57ए

नयना रोते पूछ रहे हैं, सुख जीवन का छिपा कहाँ है? औरों के जो आँसू पोछे, उसमें ही आनन्द बढ़ा है। लगा सको तुम जितने टाँके, औरों के जीवन को सीकर। कितना बिखरा दर्द यहाँ पर, आंसू गिरते रहते झर झर।

दिल जख्मी है तू भी पीड़ित, आंखे गीली टीस छिपी है। बन बन्जारा तू गाता जा, यहाँ ठिकाना कहीं नहीं है। बाट प्यार को प्यार मिलेगा, मिटते हम यह सदा रहेगा। बीत रहे जो पल तेजी से, जीवन का आनन्द मिलेगा।

58ए

जिन्दगी ने आज ठानी, खून तेरा हो न पानी। धार्म के इस यु) में हम, क्यों नही हो जायें ज्ञानी। जिन्दगी यह खेल खेले, वीर ही संग्राम जीते। बन के कायर भागते जो, बन कलंकित जग में जीते।

चल यहाँ दो दिन का मेला, गम यहाँ तू हँस के पी ले। चल यहाँ चलता ही जा तू, जिन्दगी का जाम पी ले। गिर भी जाये, इस सफ़र में, गिर प्रभु चरण ले ले। ना सफ़र में तू अकेला, मिल सभी के साथ जी ले।

बह रहे झरने अनेंको, तू नदी का रूप ले ले। कट भी जायेगा सफ़र यह, तू भनक सागर की ले ले।

59ए

ना समझ तू है अकेला, डरना नहीं चल राह पर। किसको पुकारोगे यहाँ, ना तू यहाँ चित्कार कर। नव नियति से ना बड़ा है, तू आंख उसमें डाल दे। संग जग के बह ले तू भी, पतवार अपनी खोल दे।मिट रहे रिश्ते पुराने, नित ही नया सब हो रहा। कौन से कोने में बैठ, क्यों याद कर तू रो रहा। चले जाओ भूख हो तो, ना भूख हो तो छोड़ दो। मही पीड़ित भूख से है, अभिमान करना छोड़ दो।

कौन किसके संग यहाँ है, निज चाह से जग चल रहा। संग छूट जाये कब यहाँ, आंसू धारा पर बह रहा। याद करते रह गये सब, अश्रु भी सूखे नयन के। जायेगी काली रातें, गीत उठते है चुभन के।

प्यार के दो गीत गा लें, मार्ग यह कट जायेगा। दंश को तू न दे किसी को, फ़िर नहीं यहाँ आयेगा।

60ए

अपनी पीड़ा से बोझिल सब, अपने गम को तू भूल जरा। मन गा रे गा कुछ गीत सुना, आनन्द खिला कर झांक जरा। दुख के बहते इस सागर में, बैचेन हुआ दिल रोता है। मुस्कान खिलें वह तीर चला, आशायें ले तू जीता है।

कर जतन यहाँ सब भाग रहा, जिय इस भव में है डोल रहा। कैसे समझाऊँ इस मन को, पीड़ा में निज की डूब रहा। प्यार प्यास ले सब जग घूमे, नहीं प्यार दे पाते अपना। दंश भूल मन प्यार बाट लो, खिल जाये जीवन ना रोना।

*जग में आये रोते रोते, क्या रोते रोते जायेगे? जतन करो मन कुछ तो ऐसा, सुमन यहाँ हँस महकायेंगे। बह मन बह मन बहता जा तू, अज्ञात दिशा पथ ज्ञात नहीं। प्रेम पुजारी बनो यहाँ तुम, सुख की होवे बरसात यहीं।*61ए

व्यर्थ सारा खेल चलता, व्यर्थ भी तो खेलना है। इस जहाँ में हँसो रोओ, नियति जो है झेलना है। शिकवे कितने ही कर ले, सब मिटा ही जा रहा है। प्यार का मन जाम पी ले, दुख यहाँ बिखरा पड़ा है।

सब बिछुड़ते हैं धारा पर, सत्य का मन घूंट पी ले। ूल खिलकर सब गिरेंगे, पोंछ आंसू दुआ ले ले। सत्य जब स्वीकार होगा, छल कपट से दूर होगा। गुनगुना ले गीत ऐसा, प्यार बरसे जिय खिलेगा।

62ण

मांगती धारती है ;ण, उसको चुकाना है यहाँ। आलस्य को सब त्याग कर, जन्नत बना ले तू यहाँ। बहा जाता सब यहाँ, प्रीति बिन है रस नहीं। डोर यह कब टूट जाये, जाग जिय भरमा नहीं।

श्रम की बूंदे गिरती जो, खिले उसमें ूल हैं। तू आंसुओं को पोंछ ले, प्यार के सब खेल हैं। प्यार को अपना यहाँ तू, दे सके तो प्यार दे। जा रहे उस पार सब है, दंश अपने त्याग दे।

63ण

बहती धाारा किसे खोजती, वह झरनों में मिल जाती है। झरनों के संग मिल गा कर ही, धाारा नदिया हो जाती है। सबको ही सागर बुला रहा, ना साथ किसी का छोड़ रहा। सब अंश उसी के खेल यहाँ, पागल मनुआ तू विलख रहा।

*तुम साथ चलो या अलग चलो, सब ओर वही, वह नहीं कहाँ। गहरी नजरों से देख जरा, जीवन का सौरभ छिपा कहाँ। समझाता जा इस मन को तू, संग गीत प्रीति के गाता जा। वीणा में उठा प्यार की धाुन, पीड़ित जग की हर्षाता जा।*64ण

सरिता सागर से मिलने को, प्रकिल वह है बढ़ती जाती। चट्टानों से टकराती है, अपनी गति को वह ना खोती। मिलन हुआ मग में बहुतों से, कर वह तृप्त निरन्तर बढ़ती। नहीं किसी से करती शिकवा, धाुन अपनी में चलती जाती।

अपकार नहीं उपकार नहीं, शिक्षा देती बस चलने की। कितने ही दन्श लगें मग में, वह रूके न बस धाुन चलने की। कभी नहीं रूकना है हमको, अन्तिम सांसों तक चलना है। आनन्द छिपा चलने में है, इसको न कभी भी तजना है।

घुटन छिपी है रूकने में तो, कैसे इसको अपनाओगे? जीवन भर धाड़के जैसे दिल, मृत्यु नहीं तुम अपनाओंगे। चलते चलते जग को देखो, प्यार लुटा हो तुम बस अपना। दो दिन का यह रैन बसेरा, कहें और क्या सब है सपना।

65ण

प्यार बांट ले मिले तुझे जो, जीवन का कुछ कर्ज चुका ले। अँखियाँ रोती जो भी देखे, उनके संग भी कुछ तू गा ले। गिरें नयन से आंसू देखे, सबको करना प्यार यहाँ पर। इस जग की तू कर ले पूजा, क्यों खाता है खार यहाँ पर।

*प्यार ले ले प्यार को दे दे, जीवन की खुशियों को ले ले। छोड़ अहम् को क्या रक्खा, जो रोते उनके दुख पी ले। तड़ रहे जो दर्द लिये है, मिल उनके संग दर्द बटा ले। बीत जायेगा रूर तेरा, बन कर ूल जगत महकाले।*66ण

जीवन है गति का नाम, इसको दे दे शान। लजाना नहीं इसे तू, वरना यह शमशान। यहाँ पर रूकता जो भी, खोते गीत सारे। झांकता ही रह जाता, लुप्त होते सारे।

जिन्दगी में चलता चल, रूक ना यह जानकर। जिन्दगी ने पीठ करी, जो रूकता हार कर। चले चल तू गाता चल, प्यार को देता चल। पीड़ा यहाँ विखर रही, नयन से बहता जल।

67ण

बढ़ती नदिया अपनी धुन में, ना पता कहाँ उसको जाना। मग में जो कुछ भी उसे मिले, अपनाती उसको है बढ़ना। गीतों से पथ का सृजन करें, सुनसान डगर आबाद करे। चलती जाये धुन चलने की, सारे जग को वह तृप्त करे।

गिर गिर कर झरने बल देते, कहते इस जग की प्यास बुझा। जीवन का तो संगीत यही, बाधाओं से जो भी जूझा। निर्जन बन भी आते मग में, चट्टाने भी पथ को रोके। बढ़ने का जिसका लक्ष्य रहा, बाधाएँ फिर कैसे रोके।

*बढ़ती जाती झरनों को ले, मिलने विशाल वह सागर से। जड़ चेतन तृप्त किये उसने, मिलने जाती निज साजन से। गा गीत यही बस सीख यही, चलने में तृप्ति छिपी यहाँ। बरसेंगे मेघ यहाँ जमकर, जीवन चलने में छिपा यहाँ।*68ए

चलता जा चुगता जा कांटे, पथ औरों को भी देता जा। गिरते आंसू में सुमन खिला, जग की बगिया महकाता जा। चट्टान यहाँ रोके रस्ता, चढ़ने का साहस तुम करना। जीवन में तीखे अनुभव हों, मन इससे तुम ना घबराना।

आंसू की लड़ियाँ गुथी हुई, बहता जा मन्जिल को पाना। बिखरा है दर्द प्यार को दे, ना गा केवल अपना रोना। मग में कांटे मारग दुस्तर, चल मंजिल को यदि है पाना। गरजेंगे बादल यहाँ बहुत, चलते जाना पर ना रूकना।

69ए

श्रम का दीपक यहाँ जला दे, घृणा वैर को दूर भगा दे। प्रेम भूख जो अन्तस्थल में, उसको तू जग में लहरा दे। नहीं यहाँ विश्राम चले जा, चलता जीवन सत्य यही है। बहा जा रहा सब दुनियां में, रूकना जीवन काम नहीं है।

ढूंढ़े पथ मिलने सागर को, नदिया बहती संग झरने ले। पोंछ यहाँ आँसू जो रोते, किसकी करे प्रतिक्षा चल ले। जग की माटी यहीं रहेगी, नहीं साथ कुछ भी जाना है। आंसू बहते ूल खिला दे, इस सुख को ही ले जाना है।

70ए

जीवन जी ले तू चलता जा, प्यार लुटा ले जग अपना है। पोंछ यहाँ जो बहते आंसू, सारा जीवन इक सुपना है। तुझे हिलायें तूफां आये, श्रम से पर मंजिल को पाये। बैठ गये जो रोना लेकर, धूल उसी पर चढ़ती जाये।

*मिटता बीज यहाँ चलता है, धारती में रस्ता करता है। कितने ही अवरोधा पार कर, श्रोत एक दिन पा लेता है। जीवन है यह चलना होगा, पथ कांटो में पाना होगा। निज दीपक को जला यहाँ पर, अन्धाकार को खोना होगा।*71ए

बहो लहर बन कर सागर में, अलग नहीं अस्तित्व तुम्हारा। सुर से सुर को मिला प्रकृति से, समझ बहो जीवन की धारा। जितने सुर से मेल बढ़ेगा, उनसे तेरा प्यार बढ़ेगा। जीवन चाहें जैसा जी ले, प्यार बढ़े हिय सुमन खिलेगा।

टीस लिये हम भटक रहे हैं, इस जग में अनजान हुए हैं। किसको कैसे समझायें हम, समझे ना दुख भोग रहे है। लहरें सागर में बहती है, संग सदा गाती रहती है। प्यार बढ़े तो जियरा हरषे, अँखियाँ फिर झर झर झरती है।

72ए

जीवन की अन्तिम सांसों तक, प्रतिपल हमको चलना होगा। प्रतिपल हृदय धाड़कता है, यह हमें समझना ही होगा। दुख दर्द यहाँ तड़न तड़न, कांटो का जाल यहाँ फैला। पाने सुगन्धा की आशा में, मत कर तू अपना मन मैला।

कांटों में खिलते ूल यहाँ, श्रम को धारती मग देती है। छोटे छोटे से बीज यहाँ, पेड़ो का सृजन करते है। श्रम को अर्पित कर सांस सांस, कदम हटा ना अपना पीछे। दो दिन का सब खेल जगत में, दंश रहे ना कोई पीछे।

73ण

जीते जीवन यह कैसे, ेर ली है आँख तुमने। क्या सुनाये दास्तां हम, जिन्दगी यह खेल कीन्हें। टूटते सुपने हमारे, याद करके रो रहे हैं। खोजते हैं प्यार तुझमें, बहे गम में जा रहे हैं।

*आस के सुपने संजोते, साथ तेरे गीत गाते। अनजान था रस्ता यहाँ पर, चाह थी तुमको रिझाते। जिन्दगी कुछ ना बिना तुम, अश्रु के हम घूंट पीते। चल रहे यादें तुम्हारी, न पता कहाँ शाम बीते।*74ण

कदम कदम पर धोखा फिर भी, चलना होगा संभल संभलकर। गिरता नीर न पूछे कोई, किसे दिखाये तू, रो रो कर। छूट रहे है सभी सहारे, निज का दीपक स्वयं जला ले। चलते चलते खो जाना, मूल मन्त्र मन यह अपना ले।

जीवन है चलना ही होगा, सुख दुख को भी सहना होगा। दंश लगेंगे जो भी मग में, सहकर उनको बढ़ना होगा। दुख को रोते रहे बैठकर, पात्र हंसी के बन जाओगे। कुंठित कर अपनी यात्रा को, जीवन गरिमा खो जाओगे।

75ण

बिखरा हुआ है दुख यहाँ पर, पीड़ का जाल ैला। बढ़ते जाना फिर भी जग में, मन करो नहीं मैला। तू देख ले नभ को नयन से, ब्रह्माण्ड चल रहा है। देखो धाड़कन हृदय की भी, अन्त तक चल रही है।

तू बैठ कर फिर क्यों यहाँ पर, विवशता रो रहा है। चलो यहाँ चलना ही जीवन, बीज पौधाा हुआ है। पतवार अपनी तू पकड़ चल, खेलो लहरों से तू। जाता जीवन खे ले नौका, अश्रु बहते रोक तू।

76ण

मत खोना निज अधिाकारों को, चहुँ ओर गि) मंडराते हैं। वह भूख मिटाने को अपनी, तन निर्ममता से खाते हैं। कर सके स्वयं की ना रक्षा, औरों की रक्षा सुपना है। वाक्य जाल में ंसो नहीं, जो श्रेष्ठ लगे वह करना है।निज की चाहत में सब जीते, न मतलब और की चाहत का। आंसू जब गिरते बने विवश, वह मांस नोचते हैं तन का। गि)ों को गि) ही रहने दो, ना भूख मिटेगी तुझ तन से। मत सोंच यहाँ सब हुए विवश, कहना क्या है तुमको उनसे।

चल पैरों में जब तक ताकत, तू प्यार बाटने का रस ले। गि)ों को अपनी छड़ी दिखा, कह गिरें कभी तब तू रस ले। जीवन चलता हम यहाँ विवश, कैसे निज के तन को हम दें। आतुर तू तेरी भूख यहाँ, पर आत्मघात कैसे कर दें।

77ण

बनने मिटने की दुनियाँ में, क्या गले लगाये बैठा है? तू झूल रहा जिस डाली पर, नाता उसने भी तोड़ा है। मत हो निराश पहचान सत्य, दो पल की सांसे हैं बाकी। जलती हर पल जग में होली, अरमान बचे फिर भी बाकी।

किस किससे करें शिकायत हम, यह तन भी अपना गिरता जाता। आंखो में सुपने तैर रहे, पर निज का पता नहीं पाता। दो घूंट अमी का नहीं मिला, कदमों से इस जग को छाना। प्यासी यह घड़ियाँ बीत रही, कैसा तुम बिन मुझको जीना।

संसार चक्र रोना है क्या, मन खुली आंख से देख इसे। अपना कहते है आज जिसे, बेगाना फिर होता हमसे। जो जला रही पीड़ा तन को, कौन तपस को मिटायेगा? धारती मुरझाया ूल लखे, कब गोद में मेरी आयेगा।

78ण

उठी वासना मिटा वासना, नहीं हार है यह तेरी। खुली आँख से खूब देख ले, नहीं ज्ञान की कर केरी। अन्धा वासना में पड़कर क्यों, अन्धो हम हो जाते है। दंश लगे तन को फिर दुख के, सिर धुनते हम रोते है।शुभ इच्छाओं को पहचाने, जीवन में सौन्दर्य भरे। औरों के हित को रौंदे ना, जीवन में उल्लास भरे। एकमात्र है प्रेम जगत में, इसको मत तू खो देना। नफरत की ज्वाला में जलकर, निज को नष्ट नहीं करना।

इस दुनिया में स्वर अनेक है, अपनी अपनी इच्छाये। खूब देख ले जी भर कर तू, फिर आये या ना आये। चलता जा तू देख यहाँ पर, कितने जीव विवश रोते। छोटे से दुख को ही लेकर, कितने हम विचलित होते।

79ण

जीवन में तुम बढ़ो निरन्तर, चूमों आकाश के तारों को। नयनों में नीर नहीं आये, देखो तुम खूब बहारों को। जीवन के रस्ते कठिन यहाँ, चलना फिर भी हंसते हंसते। मन प्रेम मन्त्र अपना लेना, तब शूल यहाँ पर हैं खिलते।

खूब लुटाओ अपना सौरभ, ना कंजूसी इसमें लाओ। दो दिन के इस जीवन में तुम, सफल खूब इसकी उपजाओ। दीप बुझाओ ना अपना तुम, कदम कदम पर मजबूरी है। काली अंधियारी रातों में, फिर भी दिशा हमें लेनी है।

गिरते अश्रु धारा पर हरपल, गिनती इसकी नहीं यहाँ पर। शूल खिल रहे कांटो में, ले तू सीख सफल जीवन कर। इस जीवन में आपाधापी, कुछ भी रहे यहाँ ना बाकी। जीवन का तू खेल खेल ले, डर मत है कुछ पल ही बाकी।

*प्यार बिना जो तरस गये है, कुछ उनमें उल्लास जगाओ। समय बेग से बहा जा रहा, क्षण भर भी ना व्यर्थ बिताओ।*80ण

आंसू निकले पीना होगा, पीड़ा को सहना ही होगा। गति जीवन का नाम यहाँ है, चलना हरपल हमको होगा। रूकती नहीं यहाँ की घड़ियाँ, साहस कर बढ़ना ही होगा। चलते चलते यदि हम उलझे, सुलझ यहाँ फिर चलना होगा।

चलना जीवन लक्ष्य हमारा, जायें कहाँ पर नहिं किनारा। सुन्दर सी इस दुनिया में हम, खिला सकें कुछ प्यारा प्यारा। कुछ पल के नाते है जग में, पागल क्यों रोता है मन में। संग साथ सब बिछुड़ रहा है, बढ़ता जा तू अपनी धुन में।

81ण

दो पल चाहा डूबूँ तुझमें, सूखे आँसू सुनसान जहाँ। मन की सरगम गाऊँ कैसे, जो सुना सके वह कण्ठ कहाँ। पथ पर चलते जो अन्तहीन, रोएँ सुनने को कौन यहाँ। विश्राम कहाँ भटके हैं हम, लक्ष्य लिये क्या आये यहाँ।

सब छोड़ बहूँ तेरे आगे, बहता पानी है रूका कहाँ? कोई भी ना हमसे पूछे, क्यों रोता है तू चला कहाँ। झिलमिल करती इस दुनिया में, कुछ रंग जमा ले ठिकां कहाँ। जो चुभन कलेजे में उठती, ना जाने है अन्जाम कहाँ।

जग को मन विदा करो हँस हँस, फिर मिले नहीं संसार कहाँ। पीड़ा की गठरी लेता चल, ना पूछ यहाँ तू कौन यहाँ।

82ण

इस मन को समझाया हमने, जीवन है इक ढलती छाया। सिसकी ले कर पूछा इसने, हम ठगे गये कैसी माया। आंखों के आंसू सूखे ना, सुन्दर सुपना भी बनता ना। बीता यह जीवन रो रो कर, अब दर्द सहा यह जाता ना।अंधियारी रातों में खोजूँ, मिल जाये हमको एक किरन। पर नियति यहाँ हमसे रूठी, मिटते है ताने बाने बुन। प्रेम प्यास ले उड़ते पंछी, उड़ते ही रहे न नीर मिला। थक कर गिरे यहाँ फिर नभ से, किससे अब बोलो करें गिला।

तुम रूठे मना नहीं पाये, धोखा हम तो हरपल खाये। मिटते रहते बस यादों में, सुपनों में भूले से आये। चाहा है कभी मिलूँ तुमसे, आँसू तुमको मैं दिखलाऊँ। ना शब्द कहूँ मैं कुछ तुमसे, रोते रोते बस मिट जाऊँ।

83ण

दर्द उठाये सीने में हम, इस जग में फिरते रहते है। अपना दर्द कहें हम किससे, जग में दुख को लख रोते है। प्रेम प्यास की लिये तड़फ सब, एक दूसरे को तकते है। फिर भी यह घट खाली रहता, बने भिखारी हम घुटते है।

आशाओं के महल बनाते, दास बने उसमें खो जाते। पर की पीड़ा को विस्मृत कर, नित नये नये श्रृंगार सजाते। प्रेम डगर है कहाँ खो गई, तरस रहा जर्रा जर्रा है। साहस कर तू चल मतबाले, कांटो में भी फूल खिला है।

84ण

गीतों को किसे सुनायें हम, जब साथ नहीं मेरे हमदम। दिन रात गुजरते यादों में, पीया जाता ना मुझसे गम। व्यथा उमड़ती अंखियाँ रोती, भटक रही जग की गलियों में। तेरी आहट को पाने को, बना बाबला मैं इस मग में।

*अपना अपना दर्द उठाये, यह सारी दुनिया रोती है। पर पीड़ा को जान न पाये, कैसी देखो लाचारी है। विलग हुआ यह जीवन सूना, किस खेमे में गया मुसाफिर। साथ हमारा दे दो हमदम, दो पल की खुशियों की खातिर।*85ण

चुप हो जाओ कुछ बोलो मत, पीड़ा को अपनी खोलो मत। पी गरल बढ़ो जग के अन्दर, घट की करूणा को त्यागो मत। दुख के दरिया में तैर रहे, सब जीव सहारा खोज रहे। दे सके उन्हें सुख दे पागल, कुछ पल हैं फिर न कोई रहे।

बहता जा बहना ही होगा, कह ना कह बढ़ना ही होगा। किससे तू करे शिकायत है, निज पीड़ा को सहना होगा। ना जोर यहाँ इस जगती पर, आना जाना उस मर्जी पर। कितना ही आँसू ढलकाओ, सब होता उसी इशारे पर।

86ण

प्रकृति यहाँ पर रंग बदलती, नित नूतन परिधाान पहनती। स्वर यदि इसके साथ मिले ना, छिन्न भिन्न पल में कर देती। कठपुतली बन यहाँ नाचते, कौन गर्व में हम इठलाते। तनिक जरा सी ठोकर लगती, त्राहि त्राहि हम पल में करते।

चलते जाना काम हमारा, रूकने से है नहीं गुजारा। पथ की पीड़ा को सह चलना, जीवन का हो लक्ष्य हमारा। खेल यहाँ बनने मिटने का, विचलित यहाँ न होना होगा। अश्रु गिरेंगे इन नयनों से, पीना हमको वह भी होगा।

कौन सुनेगा यहाँ शिकायत, सबके अपने अपने सुपने। उलझो नहीं व्यर्थ बातों में, बढ़ता जो रोका है किसने। दो पल के इस जीवन में भी, अकड़ हमारी ना जाती है। औरों को दुख देकर भी क्यों, न हमारी फटती छाती है।

87ण

जिन्दगी दो दिन की पाई, पा सके तुमको नहीं क्यों? दिल की नहीं मिटती चुभन, प्यार से वंचित हुए क्यों? पोषित धारा है आंसुओ से, शूल से बच पायेंगे न। चल रहे हैं इस जहाँ में, जायेंगे जाने पता न।

यह फूल सा कोमल हृदय है, शूल से घायल है पथ में। उर में समेटे है व्यथा को, चल रहे हैं इस जहाँ में। सब ही सुखी हों इस जगत में, जान किससे लड़ रहे है। नियति के हम तो है खिलौने, समझ क्यो ना पा रहे है।

88ण

घूमती आवाज हूँ मैं, दर्द का इक साज हूँ। तुम न आना पास मेरे, पड़े टूटे तार हूँ। आओ और बनो जख्मी, चाहता मैं यह नहीं। उड़ खुले आकाश में तुम, करो विचरण मैं यही।

ना लगें कांटे धारा के, ूल पर विचरण करो। जिन्दगी के हर कदम पर, खूब खुशियों से भरो। कुछ नहीं अब जिन्दगी में, देख तुमको जी रहे। मुसाफिर हूँ चला जाता, न पता कहाँ हम रहे।

यादें वह हमको प्यारी, जो संग सुहाना हुआ। कौन सा वह मोड़ आया, छोड़ बेगाना हुआ। याद जो आऊँ कभी मैं, याद कर लेना हमें। आँख नम करना नहीं, चाहें विसराना हमें।

ढूंढ़ती फिरती है आँखें, सारे इस संसार में। ढूंढ पाता पर नहीं हूँ, खो गये संसार में। फिर भी ढूंढेगे तुम्हें, मिटेंगे हम ढूंढते। न करेंगे कोई शिकवा, गमों को हम निगलते।

आँखों में तेरी झाकूँ, तभी दुनिया दीखती। बिना तेरे सब अंधोरा, रोशनी ना दीखती। तेरे आने पर बहारे, धवनि मधुर हो गूंजती। न मिले और बने छलिया, गमें दुनिया दीखती।देख तुम लाना न आंसू, यह हारेगी जिन्दगी। मैं कभी हारा नहीं हूँ, चाहती यह जिन्दगी।

89ण

सुरसा सी है भूख यहाँ पर, मजबूरी का दन्श यहाँ है। पागल मनुआ खोज रहा है, जीवन का आनन्द कहाँ है। अपने अपने खेल खेल कर, सब ही खो जायेंगे जग में। कुछ पल का जो साथ बना है, जी भर उसे देख ले मग में।

खेले हम दो पल हँसे यहाँ, जीवन सारा बीत गया है। उन आंखियों के नीर न पोंछे, जिनका जीवन तड़ रहा है। प्रेम खो गया इन नयनों में, स्वारथ की चक्की में पिस कर। कैसे इसको पंख लगेंगे, उड़ना तो चाहे यह नभ पर।

बीती बातें यहाँ जलाती, पल पल में वह हमें रूलाती। बंधा अतीत से मुक्त हुए ना, वर्तमान खो ना हर्षाती। आंसू अपने तू पीता जा, जग को खुशियां हर्षाता जा। चमकेंगे आंखों के मोती, जगत समर्पित तू होता जा।

90ण

एक लरह सागर में चलती, पीछे और चली आती। वह विशाल सागर में नाचे, नही हाथ है वह आती। मस्ती छिपी हुई लहरों में, सागर भी लहराता है। दशों दिशाएँ हर्षित होती, संगीत शोर मचाता है।

कोई लहर बड़ी ना छोटी, झिलमिल सी यह नाचें हैं। बन बन कर यह मिट जाती हैं, समझ राज ना पाती है। कुछ भी अपना नहीं यहाँ है, सागर सब ओर वही है। मरने मिटने की कथा अथक, जियरा यह भरमाया है।लहरें सब दौड़ रही पाने, मन्जिल ना जाने क्या है? निज के अन्दर ना देख सके, कैसी सागर माया है। क्यों खेल यहाँ पर भूली हैं, अपने गम में डूबी है। कीमत मैं की नहीं यहाँ है, यह खूबी सागर की है।

गम को पाले अपने दिल में, क्या पाने को दिल भटके। सागर से प्यार न कर पाये, लहरें लहरों में भटके। सागर से प्यार यहाँ होवे, लहरें सागर हो जायें। सब मुक्ति छिपी इसमें ही है, सागर समझो लहराये।

91ण

जाये बता दे कहाँ पर, सुन ले यहाँ पर कौन है? कितने बहाये नीर पर, आकाश भी तो मौन है। मजबूर हैं हम क्या करें, तुझ प्यार को हैं तरसते। नयनों में नीर गिर रहे, विधिा के खिलौने नाचते।

कुछ पल गुजारे प्यार से, वह ही बहुत है अब मुझे। कट जायेगी यह जिन्दगी, नहीं दन्श सताये तुझे। ना याद करना तुम कभी, किस्मत हमारी यह बनी। ना दोष तुमको दे रहे, यह आंख आंसू से सनी।

अब भूल जाओ तुम हमें, पता ना शाम कहाँ ढले। कुछ पल गुजारे प्यार से, तुमको न दुख कोई खले। अपना बना सके न हम, यह टीसता रहेगा गम। सब कूल जाते छूटते, आँखे कितनी होवे नम।

92ण

थके यहाँ पर कितने टूटे, कहा न जाये तुम क्यों रूठे? किसको अपना कहें यहाँ पर, आँसू भी हैं मुझसे रूठे। तुम्हें बुलाते तुम ना आते, नई नई नित जुगत भिड़ाते। सूख गये आँसू सब मेरे, काश देख तुम सब यह पाते।कैसे गाऊँ स्वर ना उठते, टूटी वीणा किससे कहते। दिल बैचेन तुझे नहीं पावे, विवश बने हम तेा है रिते। बीत रहे दिन रैना आवे, अन्धियारे में सब खो जावे। मिटता जाता है सब खेला, काहे अपना जिया जलावे।

जला प्रीति का दीपक पगले, जलन मिटेगी जग में बह ले। बिन प्रीति नहीं होय उजाला, सत्य जान जिय को सहला ले। थिर कुछ ना मन को समझा ले, बीतेंगे सारे ऊसाने। आनी जानी इस दुनिया में, मन गा मन गा मधुर तराने।

93ण

चल चल थके यहाँ हम, ना तुम मिले यही गम। किसको व्यथा सुनाते, आँखे मेरी हैं नम। यादें तेरी लेकर, हर दिन मुझे जलाता। बहें यह नीर मेरे, रूठा मेरा विधााता।

करते हैं इंतजा हम, आओ तुम ना आओ। जी लेंगे यादें ले, कितना मुझे जलाओ। आँखों से नीर बहें, जाये कहाँ मुकां पर। कोई नहीं ठिकाना, पर नाम है जुबां पर।

कितना ही तुम रूठो, न नीर बहते देखो। बीते सारी घड़ियां, यह दिल मेरा परखो। न याद करना हमको, जा रहे दूर तुमसे। पर जानना यही सच, न प्यार कम था तुमसे।

94ण

दो बूंद मिली ना तरसे हम, पानी बरसे रिमझिम रिमझिम। क्या बनी हमारी नियति यहाँ, मिटता ही ना इस दिल का गम। प्यारा पी छोड़ गया हमको, दर दर की ठोकर खाते हम। निर्मोही का दिल पिघले ना, यादों में नीर बहाते हम।पलकें भीगी ले घूम रहा, बैना सुनने को तरस रहा। आँखे यह लाल हुई रो रो, पत्थर दिल मुझको रूला रहा। देखो ढलती जाती संधया, वह अन्धाकार में कौन छिपा। क्षण भंगुर स्वप्निल सी दुनिया, मन आशायें ले यहाँ चिपा।

बहती जाती जीवन नदिया, रूठे ही रहो मेरे छलिया। पीड़ा का सागर उबल रहा, तुम दूर रहो ना जले जिया। चल चल कर हार गये हम, घुटती आशायें ना है दम। महफिल तेरी बस सदा सजे, मिटता सब अब तू कर ना गम।

95ण

कांटे ूल बने जीवन में, खुशी हवायें लायें। जीवन की इस पगडण्डी पर, प्यार तुम्हारा पाये। याद तुम्हारी जब भी आती, अँखियाँ नीर बहाती। ऐसे भी क्यों रूठे प्रियतम, समझ नहीं कुछ आती।

टप टप नीर गिरें अंखियों से, देखें तेरा रस्ता। चाहूँ सदा तुझे जीवन में, खुशियों से मैं भरता। बने मुसाफिर जग में आये, आओ प्यार बाट ले। कुछ भी इससे कम ना होता, रंग सुनहले भरले।

जब जब नजर उठाई दीखा, सुपना यह क्या झूठा। दिल की पीड़ा किसे सुनाऊँ, कौन सुने तू रूठा। कछ पल की है आँख मिचौनी, किसनें खुशियाँ छीनी। बही जा रही जीवन नदिया, रूके न चादर छीनी।

96ण

मर्म क्या है जिन्दगी का, जान न पाया कोई है। टीस तो सबमें छिपी है, कहते सब अपनी सी है। गीत तेरे गीत मेरे, गीत सबके उठ रहे हैं। लुप्त हो जाते कहाँ पर, क्या कहानी कह रहे है?चाहतों की ले गठरिया, इस धारा पर चल रहे हैं। यह कभी पूरी न होती, खो सभी उसमें रहे हैं। सब कुहासे में घिरा है, फिर भी चलना है जरूरी। बन्द जब तक सांस ना हो, गीत गाना है जरूरी।

इस जहाँ में रंग बिरंगे, सुख दुख ले चल रहे हैं। तृप्ति हो पाती नहीं पर, फिर रहे हम भटकते है। खुलती जब जग में आंखे, वासना ले दौड़ता है। जिन्दगी के हर कदम पर, देखो दुनिया यह क्या है?

स्वप्न कितने ही सजाये, पर रूदन में खो गये सब। दु:ख की ज्वाला में जला, क्यों आंख मूंदी तूने रब?

97ण

थका हूँ मैं चलते चलते, अब नहीं मुझको निहारो। दे सका न तुमको खुशियाँ, तुम करो शिकवा न यारो। मन में मिट्टी में मिला हूँ, टूटता ही जा रहा हूँ। तुम रहो जग में सदा खुश, आस यह ले जा रहा हूँ।

चलकर गिरता मैं मग में, मांगता तुझसे सहारा। दे रहा दुख क्यों तुझी को, जिंदगी का दांव हारा। प्यार से देखूँ तुझे मैं, आंख में आंसू न देखूँ। गम मिले मुझसे न कोई, होठ पर मुस्कान देखूँ।

जिन्दगी का कारंवा यह, बह रहा यह सदा से है। यहाँ मिलते हैं बिछुड़ते, यह तमाशा चल रहा है। जान पाया कोई भी न, अजनबी क्यों एक होते। आती जब मनहूस घड़ी, पल में ही वह बिछुड़ जाते।नियति है सबकी यहाँ पर, दोष किसको दीजियेगा। पोंछ आंसू हम न पाये, मफ हमको कीजियेगा। कह न पाते कुछ कहे क्या, बीत जाती जिन्दगी है। आँख में आंसू हमारे, दिल में चिन्गारी जली है।

क्या यहाँ अनुकूल होगा, क्या यहाँ प्रतिकूल होगा। सब समय की धाार कहती, ना समझना भूल होगा। ठोकर खाते हैं गिरते, फिर भी हम न चेतते हैं। कर रहा दुर्भाग्य पीछा, दुखों को हम भोगते है।

आंधियाँ चलती यहाँ पर, बहा उसमें जा रहा हूँ। आँधियाँ पूछे नही क्यों, उठ नहीं मैं पा रहा हूँ।

98ण

निज साहस से बढ़ना जग में, ना दोष दूसरे को देना। अवलोकन कर अपनी प्रतिभा, निज मंजिल पर बढ़ते जाना। कदम कदम पर कांटे बिखरे, पीड़ा का है अम्बार यहाँ। कर्मभूमि की इस धारती पर, परिचय देना है तुम्हें यहाँ।

दोष दूसरों को देकर तुम, क्यों अपना पल्लू झाड़ रहे। अपनी प्रतिमा को कुंठित कर, क्यों अपना रूप बिगाड़ रहे। यदि दोगे दोष दूसरों को, खो जायेगी तेरी प्रतिभा। कंट मार्ग से निकल सको ना, फिर रखते हो कैसी प्रतिभा।

दोष रहे देते जग को ही, निज सौरभ ढूंढ न पाओगे। खाली हाथ ही आये यहाँ, फिर खाली ही तुम जाओगे। अवलोकन करो तुम्ही अपना, नही करो प्रतिभा को कुंठित। जग को गाली देने से है, रूकता विकास न हो कुंठित।औरों को दोषी ठहराकर, निज को प्रसन्न ना करना तुम। इस कुचक्र में मेहनत से बच, खिलवाड़ करो ना निज से तुम। सच सुनना ना चाहो जग में, जोड़ झूठ से नाता फिरते। ओढ़े जब तुम झूठ चदरिया, सत्य प्रकाश मे न टिक पाते।

दोष दूसरों को दे झूठा, खूब बचाते अपने को तुम। मन का सुख ना ले पाओगे, देकर धोखा अपने को तुम। अहंकार से दावा करते, खुद को प्रतिभाशाली कहते। दोष दूसरे को देकर तुम, प्रतिभा की गरिमा कम करते।

निज से मत खिलवाड़ करो तुम, प्रतिभा है तो चलते जाओ। झूठ प्रपंचो को तुम गढ़ कर, मत कोसो ना ही चिल्लाओ। शिकवा न करते वह जग से, जो जग को देकर जाते है। कांटो में चुन चुन कर ही वह, मारग में फूल खिलाते हैं।

जो महापुरूष होते जग में, वह दोष न औरों को देते। चढ़ जाते है खुद शूली पर, वह जग से शिकवा न करते।

99ण

प्रेम शब्द में राम छिपा है, प्रेम से देखो प्रेम समझो। करो अर्चना यहाँ प्रेम की, सोओ जागो प्रेम को बूझो। अहंकार का त्याग करो मन, यहाँ सभी कुछ मिट जाना है। लिये प्यार तुम भी मिट जाओ, और नहीं कुछ भी पाना है।

बोलूँ तो कुछ बोल न पाया, नहीं समझती क्यों यह दुनिया। प्रेम बिना ना कभी मिले सुख, सत्य समझ यह क्यों ना आया। समझ जो पाते जीसस को हम, शूली देकर नहीं चढ़ाते। उस महान सुकरात सूर्य को, विष का प्याला नहीं पिलाते।

*मीरा नाची गाई रोई, उसको भी पहचान न पाये। ना जान सके हैं भूल कहाँ, उन्हें मिटाकर फिर हम रोये। महावीर बु) जैसे ज्ञानी, फिरे हमारे दरवाजे पर। त्याग करो अपनी गुरूता का, उन्हें निहारो हल्के होकर।*100ण

टूट गये क्यों खून के रिश्ते, स्वारथ की धारती में धांसकर। खेले कूदे संग साथ थे, गया भूल तू सभी मुसाफिर। देख प्यार से उन नयनों को, जिनको तू देखा करता था। विलग न होंगे हम जीवन भर, संग साथ था हृदय भरा था।

मीठे मीठे सुपने थे जब, आशाओं के दीप जले थे। तोड़ चला सब भूल मुसाफिर, इन नयनों से अश्रु गिरे थे। प्रेम की गंगा में कोड़े ने, अपना जहर हाय क्यों घोला। प्रेम बिना ना जीवन में रस, क्यों ना इससे निज को तोला।

चाह लिये थे प्यार लिये थे, एक दूसरे पर मिटने की। प्रेम भूल मत इस जीवन में, सत्य कहानी है जीवन की। प्यार पंथ पर चलो मुसाफिर, नहीं झगड़े से कुछ लेना है। नदी नाव संयोग यहाँ पर, नहीं किसी को भी रहना है।

101ण

तेरा घर अब वही बाबरी, सुख हो या चाहें दुख हो। तेरे लिये अग्नि के सम्मुख, तेरा वर कैसा ही हो। तेरी रक्षा नहीं कर सके, कोने में तू रो लेना। करते करते सेवा सबकी, डांट सभी की खा लेना।

सारा यह बचपन बीत गया, यौवन में उत्पीड़न क्यों? सुपने धूसित हुए जा रहे, प्रभु ऐसी निर्ममता क्यों? प्यार पींग को बढ़ा न पाई, किससे अब करें लड़ाई। अपना अपना फर्ज चुका कर, बाबुल भी करी विदाई।

*किससे रूठे नहीं मनाने, को कोई भी आता है। बहती रहे अश्रु की गंगा, प्यार न कोई करता है। धान लोलुप संसार बनाया, पैसे के सब दीवाने। चाहत मैं कर सकूँ न पूरी, दीप बुझे न कब जाने।*102ए

घूम बाबरी तू इस जग में, दुख पाने को छोड़ दिया है। सब असहाय बने चुप बैठे, तुझसे मुख को मोड़ लिया है। जीवन की अन्तिम सांसों तक, अदा करेंगे ऋर्ज तुम्हारा। बिखर गया सब खेल बीच में, किस्मत ने जब गोता मारा।

घर से टूटी हुई बाबरी, कैसे हाय निमन्त्रण दूँ मैं। थर थर पग ये कांप रहे है, कैसे हाय सहारा दूँ मैं। तेरी यादों को ले लेंगे, घुट घुट कर हम भी जी लेंगे। पर कैसे यह बोझ संभालू, तुमको कंधाा कब तक देगे।

जिन्हें सुनाया करता लोरी, उन ही आंखों में झांक रहा। नहीं वेदना तुझे सताये, मन में यह अरमान रहा। सूर्य उगा है पार क्षितिज के, लायेगा क्या कभी वह खुशियाँ। अश्रु नयन के सूख चुके है, कब होगी प्यारी सी बतियाँ।

सबकी सुख की चाहत अपनी, पीड़ा कोई क्यों वरण करे। आदर्शो की व्याख्या देकर, उन सबका वह खून करे। जग को देखूँ हँसूं रोऊँ क्या, परिवर्तित जग का मेला है। खुद को कैसे हाय सम्भालू, कदम कदम पर ही धाोखा है।

पनघट बीच रही तू प्यासी, गगरी तेरी यह टूट गई। अंधाी गलियों में भटक रही, ना तुझको कोई राह नई। कांटे ही कांटे चुनती तू, पगली किससे प्रीति बिठाई। पड़ी दया पर बनी उपेक्षित, आंसू गिनने मजबूर हुई।

*पंथ ना दीखे इन गलियों में, यह हारे रो रोकर नयना। कैसे समझाऊँ इस मन को, अपने सुनाऊँ किसे बयना। तेरी आंखो का भोलापन, बचपन हँसता रोता यौवन। पीव विरह में भई बावरी, कैसे देखूँ तेरा क्रन्दन।*103ए

दूधा पिलाया जिस गोदी ने, आंखे खोली जिस आंगन में। बचपन जिनके साथ बिताया, पलट गये वह भी दुर्दिन में। बाबुल घर से दूर हुई मैं, पी का दुखड़ा सहा न जावे। लाऊँ कित से हाय पिटारा, सासू का जो दिल बहलावे।

देवर जेठ घूर कर देखें, जैसे मैं कोई मुजरिम हूँ। किया भूख ने बेबस मुझको, कहते हैं वह मैं पगली हूँ। माल यहाँ यह लाई क्या है, नन्द जेठानी ताने देती। इस घर की रानी बन बैठी, दुख के आंसू पोंछ न पाती।

पी जूए में खूब उड़ावे, इस घर को अब कौन चलावे? कैसी हुई अभागिन मैं हूँ, चुभन मुझे दिनरात सतावे। जिस घर से मैं पली बड़ी हो, इस सारे जग को देखा है। तेरा घर यह नहीं बाबरी, अब तू उस घर की रेखा है।

डोली उठती है मैके से, पति घर से अर्थी उठती है। कैसे आग लगाऊँ निज को, कैसा किस्मत का धाोखा है। सास दिखाती है बस ठेंगा, बच्चा किलकारी ले रोता। पी भी कहता लाओ पैसा, पेट है भूखा न समझौता।

क्रूर बनी हैं इनकी आंखे, भूख भूख पेट चिपका है। कौन सम्भाले हाय इन्हें अब, दूधा दूधा बच्चा भूखा है। मिलते है उपदेश भतेरे, बसा बसा घर हम सब तेरे। छली हुई इस दुनिया की मैं, मौत न जाने कब आ घेरे।